CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

State Museum, Library, Lko
700.954
म
3836

भारत-कला-भवन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

बनारस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY
Acc. No. 3833
Book No. 700·954
म

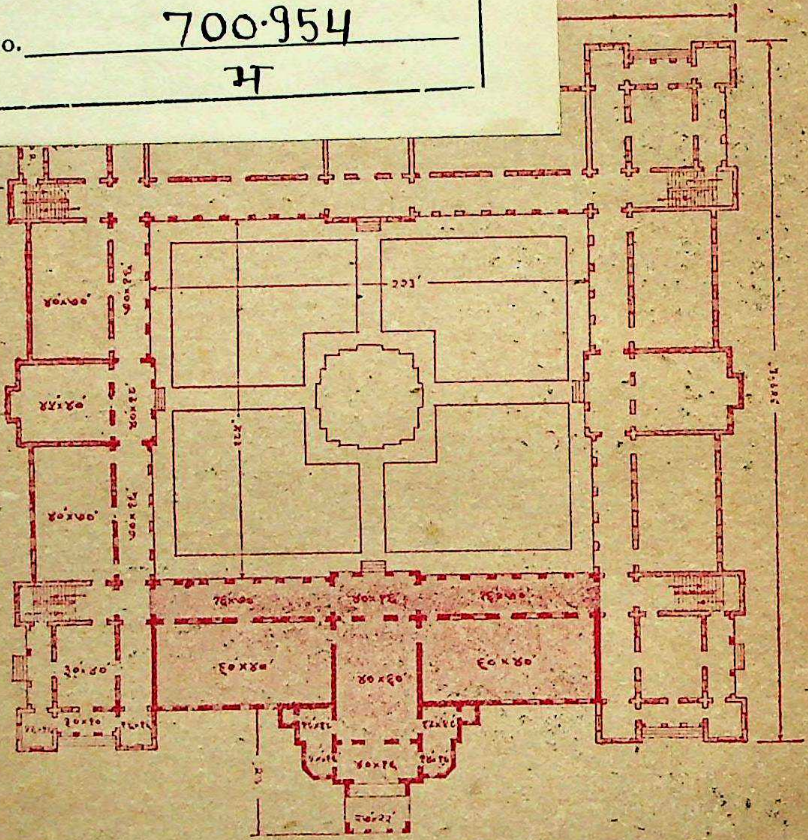

कला भवन की इमारत का नकशाः इसका गहरे रंग वाला अंश बन चुका है।

हरों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

State Museum, Library
क्र. 3833
24/9/5
700.954
ज

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

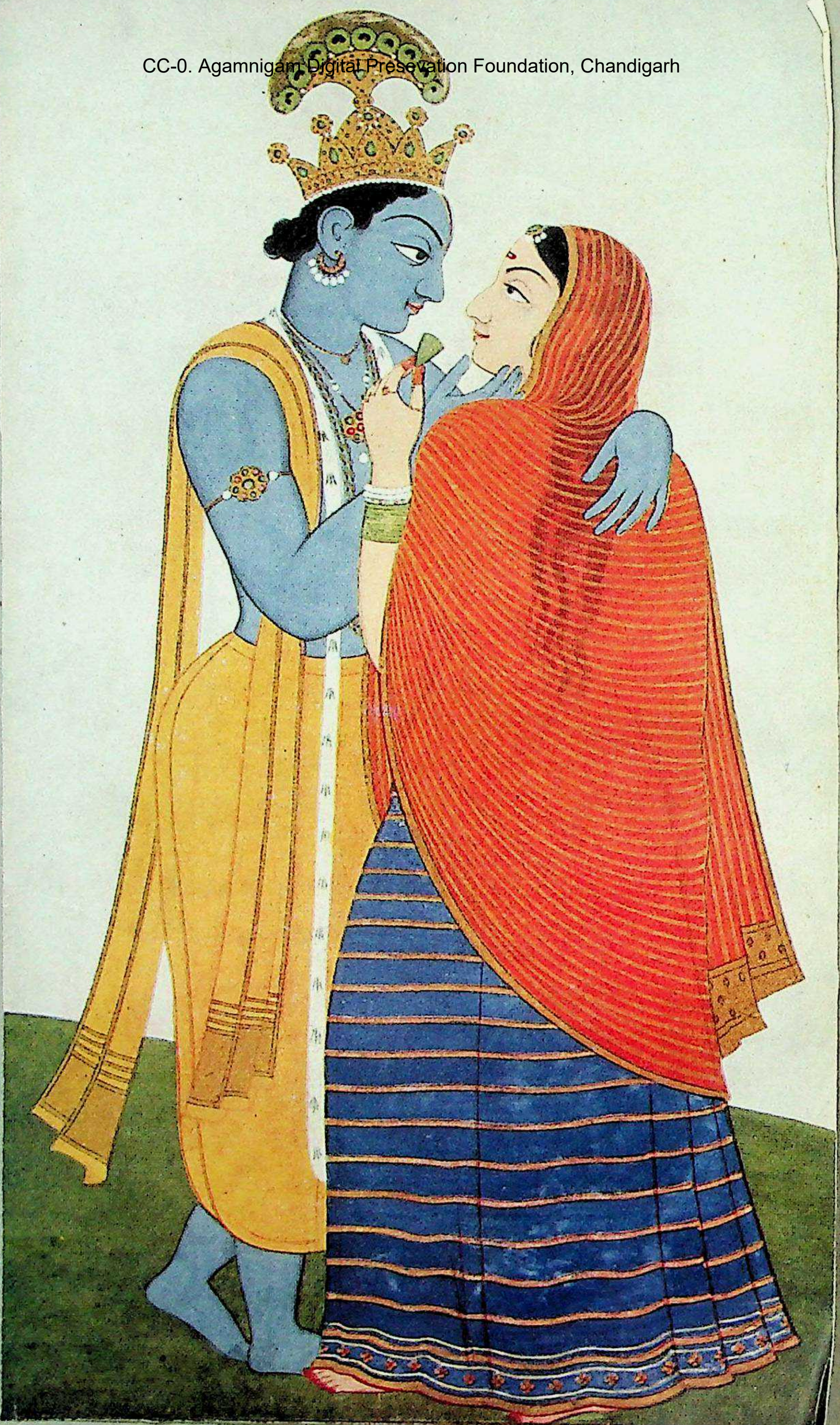

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भारत-कला-भवन : एक परिचय

राष्ट्र की कला-चेतना को उद्‌बुद्ध करने एवं अपनी कला के संरक्षण, प्रदर्शन, रसास्वादन, अध्ययन और प्रचार के ध्येय सामने रख कर आदरणीय डा० भगवान्‌दास जी की प्रमुखता में भारत-कला-भवन, काशी, की स्थापना, भारत-कला-परिषद् नाम से, जनवरी १, १९२० ई० को हुई। कवीन्द्र रवीन्द्र सहर्ष इसके आजीवन सभापति हुए और कलागुरु अवनीन्द्र-नाथ ठाकुर उप-सभापति। आरम्भ से ही इसकी अभीष्ट प्रगति होने लगी; १९२२ ई० में इसका चित्र, मूर्ति संग्रह स्तुत्य हो चुका था। १९२५–२६ ई० में इसके चित्रों का एक बृहत् प्रदर्शन कांग्रेस-प्रदर्शनी, कानपुर में हुआ जिसका प्रेक्षण राष्ट्रपिता बापू ने बड़े रस से किया।

आरम्भ में कलाभवन एक किराए के मकान में था। १९२९ ई० में वह काशी नागरी-प्रचारिणी सभा में चला गया और एक बड़े मण्डप में उसका प्रदर्शन आरम्भ हुआ। वहाँ विश्ववन्द्य बापू ने कलाभवन संग्रह का दूसरी बार प्रेक्षण किया। उन्हीं दिनों कलाभवन ने एक अपील निकाल कर राष्ट्र से चित्र, मूर्ति इत्यादि कला एवं पुरातत्व की वस्तुएँ माँगी थीं। इस अपील को यंग इन्डिया में स्थान देते हुए उन्होंने यह टिप्पणी लिखी—

"Before receiving this notice for publication I had seen the commodious hall in which the Museum is to find an abiding place and I saw also the promising collection already installed there. The appeal...should receive a generous response from all lovers of art. M. K. G."

—यंग इंडिया, अक्तूबर २, १९२९

आरम्भ में संग्रहालय के साथ साथ कलाभवन में संगीत विभाग भी था, जिसमें संगीत-शिक्षण, प्राचीन स्वर-लिपियों के संग्रह और प्रकाशन का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कार्य होता। साथ ही,एक चित्र-शिक्षालय भी संचालित किया गया था किन्तु, आगे चल कर कवीन्द्र रवीन्द्र के परामर्श से कलाभवन ने अपनी सारी शक्ति संग्रहालय की अभिवृद्धि में केन्द्रित की; उक्त विभाग बन्द कर दिए गए। निरन्तर अभिवर्धित होता हुआ आज यह संग्रह समूचे संसार के भारतीय संग्रहालयों में अपना एक स्थान रखता है। इसी संग्रह को यह गौरव और सौभाग्य प्राप्त है कि राष्ट्रपिता ने तीन तीन बार इसका प्रेक्षण किया और १९३६ ई० में, २५ अक्तूबर को जब वे अन्तिम बार पधारे तो अपने श्रीहस्त से यह सम्मति प्रदान की—

संग्रह बहुत अच्छा है.

मो. क. गांधि

आरंभ से अब तक बहुसंख्यक जनता एवं अनेक विशिष्ट व्यक्तियों, कलाप्रेमियों तथा कलामर्मज्ञों ने कलाभवन का प्रेक्षण किया। उन्होंने जो सम्मतियाँ दी हैं, उनमें से कुछ एक आगे मिलेंगी (पृ० १४)।

कलाभवन में अब तक ५०४७० के ऊपर वस्तुएँ संगृहीत हुई हैं। इनके मुख्य ग्यारह विभाग हैं, जिनका संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है—

१. प्रागैतिहासिक विभाग (३६७ वस्तु) यह विभाग अभी अपेक्षाकृत छोटा है। इसमें ताम्रयुगीन कई पूजनीय आकृतियाँ तथा हथियार और भारत सरकार द्वारा प्रदत्त मोएनजोदड़ों की कुछ वस्तुएँ हैं जिनमें वहाँ की मुहरें, मिट्टी के खिलौने तथा चित्रित बर्तनों के टुकड़े प्रमुख हैं (फलक—१)।

२. मूर्ति विभाग (६७२६ वस्तु) यह विभाग चित्र-विभाग की भाँति विस्तृत नहीं है। फिर भी,इसमें सभी काल और क्षेत्रों की चुनी मूर्तियों का संग्रह है। पुरातत्त्व विभाग से प्राप्त मौर्य-कालीन ओपदार मूर्ति खंड एवं लाल पत्थर की कई अलंकृत दुर्लभ चकियाँ यहाँ हैं (फलक—१६)।

शुंग-कालीन मूर्तियों में भरहुत की यक्षी महत्त्वपूर्ण है। कुषाण-कालीन मूर्ति में मथुरा की मूर्ति-कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन है, जिसमें प्रसाधिका तो भारतीय कला के गिने चुने रत्नों में है (फलक २)। इसी विषय वाली एक अन्य मूर्ति की भंगिमा अनुपम है (फलक—४)। माखन चोरी भी कुषाण काल की एक अनोखी मूर्ति है (फलक—३)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुप्त-काल में काशी प्रांत की मूर्तिकला विशेष उन्नत थी, अतः स्वाभाविक है कि उस काल की मूर्तियाँ हमारे संग्रह में अधिक हों। इनमें गोवर्धनधारी कृष्ण की विशाल मूर्ति अपने ढंग की अद्वितीय और अत्यन्त प्रभविष्णु है। उसी काल वाली का र्ति के य की मूर्ति भी बड़ी सुंदर, उदात्त और ओजस्वी है (फलक—५)। बुद्ध की कई मूर्तियाँ, सेतुबंध तथा दम्पती मूर्ति (संभवतः चंद्रगुप्त-कुमारदेवी), इस काल के अन्य विशिष्ट उदाहरण हैं। उसके कुछ बाद का—राजघाट (प्राचीन काशी) से प्राप्त—क लि त मु ख चारुता में अप्रतिम है (फलक—६)। चंदेल मूर्ति वैभव का एक सुन्दर उदाहरण एटा से प्राप्त पा र्व ती - प रि ण य है (फलक—८)। राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त प्रदत्त द र्प ण-गौ री भी इस काल का एक विशिष्ट नमूना है (फलक—९)। पाल-कालीन कि न्न र (पिछला टाइटिल) और विष्णु आदि भी उल्लेखनीय हैं।

गांधार शैली के छोटे किन्तु महत्वपूर्ण संग्रह में तपस्या-कृश बुद्ध-मुख, बु द्ध ज न नी (फलक—१०), बो धि स त्व (फलक-११) तथा मसाले (स्टको) के बुद्ध-मुख उत्कृष्ट एवं महत्वपूर्ण उदाहरण हैं।

नेपाल की धातु, मृत्तिका और काष्ठ मूर्तियों का भी यहाँ उत्तम संचय है। इनमें बोधिसत्त्व का मु खौ टा (फलक—१२), मंजुश्री तथा प्रज्ञापारमिता की धातु मूर्ति और प द्म पा णि (फलक—१३) आदि उल्लेखनीय हैं।

उड़ीसा में आज भी अपनी पारंपरीण मूर्तिकला जीवित है जिसमें वहाँ के शिल्पी श्रीधर महापात्र ने नया प्राण फूँक दिया है। इसका एक प्रतिनिधि उदाहरण यहाँ के वे णी वि न्या स में मिलता है (फलक—१४)।

इस संग्रह में बहुतेरी मृण्मूर्तियाँ भी हैं। इनमें उत्तरी भारत के लगभग बीस प्रमुख क्षेत्रों तथा ब्रह्मदेश तक के नमूने हैं। राजघाट की खुदाई से प्राप्त मृण्मूर्तियों में अधिकांश गुप्त-कालीन हैं। उनमें स्त्री-पुरुषों के केश-विन्यास का अद्भुत सौंदर्य है और, तत्कालीन जीवन-चर्या का अच्छा परिचय भी। वहाँ का गुप्त-कालीन शि व-मु ख मृण्मूर्ति कला का अनुपम उदाहरण है (फलक—७)। साथ ही, हिंडोला झूलती तरुणी वाला मिट्टी का टिकरा भी उल्लेखनीय है। वहीं से मिला किन्नर-मिथुन की मूर्ति वाला मिट्टी का डब्बा कुषाण-कालीन कला का विशिष्ट उदाहरण है। कौशांबी की बहुसंख्यक मृण्मूर्तियों में शुंग-कालीन और उसकी पूर्ववर्ती कला के सुंदर नमूने हैं। इनमें क्रीड़ा-शकट और वासवदत्ताहरण का टिकरा कला एवं इतिहास की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। मथुरा वाली शुंग कालीन काली मृण्मूर्तियों के भव्य अलंकरण और केश-विन्यास की शोभा भी निराली है। (फलक—१५)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. चित्र विभाग (६२१२ चित्र) इसमें भारतीय चित्रकला की सभी शैलियों का संचय है, जिसका आरंभ तालपत्र पर अंकित ११वीं–१२वीं शती की पाल-कालीन छः पोथियों से होता है। इनके चित्र अपनी शैली के, जिनमें अजन्ता की परंपरा सजीव है, प्रतिनिधि उदाहरण हैं (फलक–१९, २०, २१)। इस ढंग की सचित्र ज्ञात पोथियाँ हमारे संग्रह को ले कर, सारे संसार के संग्रहालयों में केवल तीस बत्तीस हैं। साथ ही, यहाँ अपभ्रंश शैली की कई सुन्दर जैन पोथियाँ और कथा-काव्य के पन्ने भी हैं (फलक–२२, २३)।

आरंभिक मुगल चित्रों में दास्तान अमीर हम्ज़ा के दो चित्र इस संग्रह की अमूल्य निधि हैं। अकबर ने १५६०–७५ ई० के लगभग इस कहानी के चौदह सौ चित्रपट बनवाए थे जिनमें के सौ से कुछ अधिक आज ज्ञात हैं। इनमें भी भारत में उक्त दोनों को ले कर केवल चार पाँच हैं। आदि राज पृथु, श्वेत गज, मूसा का पलायन (फलक–२४) सारस पकड़ता धोबी, बीरबल, देवी मरियम (फलक–२५) आदि अकबर-कालीन उत्कृष्ट चित्र भी यहाँ हैं। जहाँगीर-काल के उल्लेखनीय चित्रों में सन्त शेख फूल (शाही चित्रकार बिशनदास अंकित) और प्रभु ईसा के चित्रों की कलम बहुत ही बारीक और रमणीय है। इन दोनों पर जहाँगीर के हस्तलेख भी हैं। एक अद्वितीय चित्र संत मुईनुद्दीन चिश्ती की शबीह है। शाही चित्रकार मनोहर का बनाया जहाँगीर शाहजहाँ का चित्र बहुत रियाजी है।

शाहजहाँ-कालीन चित्रों में शाही दरबार (फलक–२६) और मुलाकात बड़े ऊँचे दर्जे के चित्र हैं। शेषोक्त चित्र का सम्बन्ध कन्दहार-विजय से है; इसमें शाहजहाँ के पुत्र मुराद तथा बल्ख के विजित अमीर नजर मुहम्मद का मिलन अंकित है। इन शाहजहानी चित्रों में कलम की बारीकी, मीने सरीखे ओपदार रंगों की छटा अनुपम है; इसका एक सुकुमार उदाहरण मुगल सुन्दरी है (फलक–२७)। मुगल शैली के सैकड़ों अन्य दर्शनीय चित्रों में—उद्यान में जहाँगीर, भारतीय सुन्दरी, चितेरिन, शाहजहाँ, दाराशिकोह का तुलादान, तैमूर का दरबार, शाइस्ता खाँ, शुजा, ईसा का अन्तिम भोज, पनघट, नील का आखेट, संतों का आश्रम, ललित रागिनी और रूपशिखा आदि हैं।

इस्लाम में चित्रण का वर्जन साथ ही, कुरान-लेखन पुण्यतम कर्म होने के कारण अरबी लिपि का खूब परिष्कार हुआ। ईरान पहुँच कर उसने ऊँट की चाल छोड़, घोड़े की चाल अख्तियार की और, ऐसे नेत्ररंजक रूप में गोचर हुई कि लुनाई में संसार की सभी लिपियों को मात कर दिया। इस नस्तालीक सुलिपि के नमूने बड़ी कदर से संगृहीत

किए जाते। उनका दर्जा चित्रों से बढ़ कर था। इनके एक से एक उदाहरण यहाँ हैं (फलक २९)।

रज़ा अब्बासी एवं अन्य उस्तादों के बनाए ईरानी शैली के अनेक चित्र भी इस संग्रह के नयनाभिराम रत्न हैं (फलक–२८)।

कश्मीर में भारतीय चित्रण की एक परंपरा चली आती थी। अकबर-शैली के निर्माण में इसका खास हाथ था। यहाँ वाले नमूनों में यह सम्पर्क स्पष्ट देखा जा सकता है। ऐसे अनेक चित्रों में राम बनगमन और जटायु रावण युद्ध कितने भावपूर्ण हैं।

भारत के प्राचीन चित्रों की सीधी परंपरा में जो चित्र मालवा-राजस्थान-गुजरात में प्रस्तुत हुए, जिन्हें हम राजस्थानी शैली के नाम से जानते हैं, उनका भी यहाँ विशिष्ट संग्रह है, जिसमें प्रारंभिक राजस्थानी चित्रों के साथ साथ, मालवा, मेवाड़, गुजरात, मारवाड़, किशनगढ़, बूँदी, नाथद्वारा, जयपुर एवं बुन्देलखण्ड आदि राजस्थानी की सभी उप-शैलियों के उदाहरण विद्यमान हैं। प्रारंभिक राजस्थानी चित्रों में रागमाला और नायिका भेद के चित्र अच्छी संख्या में हैं (फलक–३०)। कृष्ण-चरित का एक उदात्त आलेखन मेवाड़ शैली का दावानल-आचमन है (फलक–३१)। राजस्थानी चित्रों में सन्निवेश की विशेषता देखने योग्य होती है; लेतु बंध में इसका रस लीजिए (फलक–३२)। हाथियों के स्वभाव-निरीक्षण के बहुतेरे चित्र बूँदी में १९ वीं शती के आरंभ में बने। ऐसा एक उत्कृष्ट उदाहरण बिगड़ा हाथी है (फलक–३३)। बूँदी शैली के ही अनेक प्रेक्षणीय चित्रों में कृष्ण वेषधारी उन्मादिनी राधा विशेष मार्मिक है और राधा कृष्ण नर्तन बहुत सुघर (फलक–३४)। राजस्थानी शैली अत्यन्त बहुरूप और व्यापक है। १८ वीं शती के उत्तरार्ध में उसने समस्त देश को छा लिया था। इसके अनेकानेक चुने उदाहरण यहाँ देखने को मिलते हैं।

भानुदत्त की रसमंजरी के बसोहली शैली वाले चित्र अपने चटकीले रंगों और अद्भुत आलेखन में तो अद्वितीय हैं ही, समय में भी वे बसोहली के सबसे पुराने ज्ञात चित्र हैं। उनका आलेखन काल १६९४ ई० है। इसी शैली के नायिकाभेद वाले मान-मनावन में अनुरोध-प्रतिरोध का प्रवेगपूर्ण विचित्र आलेखन है (फलक–३५)। इस शैली के रागमाला (फलक–३६) एवं रासलीला (फलक–३७) के चित्र भी भाव-अभिव्यक्ति में विलक्षण हैं।

मुगल शैली के विश्रृंखलित होने पर पहाड़ी शैली के नाम से जिस आलेखन का विकास हुआ, उसके मृदुल और ऊर्जित सौन्दर्य का यह चित्र-संग्रह बहुत बड़ा भण्डार है, जिसमें इस शैली के सभी प्रमुख विषयों एवं

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कल्पनाओं के चित्र हैं। इस शैली का कृष्णलीला वाला एक अत्यन्त ओजस्वी चित्र वत्सासुर-वध है। एक अद्वितीय बड़े चित्र में राधाकृष्ण की युगल छवि की सारी भावनाओं की, जिनका भक्त-हृदय और साहित्य में न जाने कितने दिनों से विकास हुआ है, बहुत सुन्दर व्यंजना है। इनके अतिरिक्त, आ या पा नी, प त्र-ले ख न (अद्वितीय पहाड़ी चित्रकार मानकू का आलेखन), शिशु - प रि व र्त न, पूतना-वध, महिषासुर - वध, वासन्ती, व न - वि हा र (फलक-४२), आ र ती (फलक-४३), गो व र्ध न धा री (फलक--४४), बि ज ली की कौं ध (फलक-४५), चि त्र - द र्श न (फलक-४६) आदि भी इस संग्रह के कतिपय उल्लेखनीय चित्र हैं। न व ल व धू में जीवन की एक नई देहली की ओर बढ़ती हुई नई बहुरिया के स्वाभाविक उछाह के साथ साथ मुखमंडल पर जो नैसर्गिक लज्जा है, उसके चित्रण में भारतीय नारी के मनोभाव की चरम अभिव्यक्ति मिलती है (फलक-४७)।

दकन में बीजापुर, गोलकुन्डा में अपनी अपनी चित्रण शैली १६वीं शती से चली आती थी जिनमें सान्निध्य था। इनमें तुर्की, ईरानी प्रभाव के साथ साथ पर्याप्त भारतीयता है (फलक--३८)। इन राज्यों के ध्वस्त होने पर, हैदराबाद में इनकी परम्परा लिए हुए एक शैली पनपी जिसपर राजस्थानी शैली का इतना प्रभाव है कि बहुधा आँखें धोखा खा जाती हैं (फलक-३९)। दकन की उक्त शैलियों का थोड़ा बहुत संग्रह यहाँ है। इसमें १९वीं शती की हैदराबाद वाली रागमाला चित्रावली सहनीय है।

पाल शैली की परम्परा नेपाल में आज तक चली आती है; कुछ अंकनों में राजस्थानी शैली का सम्मिश्रण भी रहता है। इन दोनों प्रणालियों के चित्रों और चित्रपटों का संग्रह यहाँ है। वहाँ मन्दिरों में तोरण की भांति लम्बे चित्रपट टांगे जाते हैं, जिनमें एक पूरी कथा अंकित होती है। यहाँ उसके एक भव्य उदाहरण में एक वैष्णव उपाख्यान आलिखित है (फलक-४०)।

उड़ीसा में अपभ्रंश शैली का एक रूप आज भी चला आता है जिसमें एक अपना सौन्दर्य है। यहाँ इसके चित्रपटों का संग्रह अभी आरम्भिक अवस्था में है (फलक-४१)। उड़ीसा में कुछ चित्र राजस्थानी प्रक्रिया से भी बने। इनमें की दशावतार वाली एक अति अलंकृत मालिका अवलोकनीय है।

१८वीं शती में योरोपियनों के भारत में जमने के परिणामस्वरूप एक ऐसी शैली चल पड़ी जो योरप की कला का एक विकृत रूप थी और कभी भारत से सात्म्य न प्राप्त कर सकी फिर भी, वह कं प नी शै ली पंजाब से तांजोर तक व्याप गई थी। उसके उदाहरणों का यहाँ अच्छा संचय है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आधुनिक युग में भारतीय चित्र-कला का जो नवीन उत्थान कलागुरु अवनीन्द्रनाथ ठाकुर के निर्देश में हुआ है उसके उदाहरणों का भी इस विभाग में सुन्दर संचय है, यद्यपि वह पूर्ण नहीं कहा जा सकता। कलागुरु के केवल तीन चित्र अभी इस संग्रह में हैं (फलक–४८)।

गगनेन्द्रनाथ ठाकुर के अंकन यहाँ अच्छी संख्या में हैं। उनके व्यंग्य चित्रों में पुलिस की तत्परता तो तीक्ष्ण, करुण आक्षेप में अद्वितीय है (फलक–४९)। उन्होंने प्राकृतिक दृश्यों के भी मौलिक अंकन किए। यहाँ का एक ऐसा प्रतिनिधि चित्र पहाड़ी पथ दिया जाता है (फलक–५०)।

कलागुरु की शिष्य-परम्परा में नन्द बाबू और असित बाबू को छोड़ कर, अनेक कलाकारों की कृतियाँ संग्रह करने में हम सफल रहे हैं। इनमें क्षितीन्द्र मजूमदार (फलक–५१) और शैलेन्द्र दे के नाम उल्लेखनीय हैं।

नन्द बाबू की एक शिष्या सुकुमारी देवी की कृति रास बहुत ही आलंकारिक अंकन है (फलक–५२)। उनके एक दूसरे शिष्य श्री कृपालसिंह शेखावत ने चित्रण का एक नया मार्ग पकड़ा है जिसमें अकबर शैली एवं राजस्थानी शैली को एक नया सजीव कलेवर दिया गया है। और, उसमें आवश्यकतानुसार चीनी चित्रकला से भी कुछ तत्त्व लिए गए हैं। यहाँ इसका एक प्रतिनिधि उदाहरण पाबू जी का एक बड़ा चित्र है (फलक–५३)। पाबू जी राजस्थानी लोक कथा में एक अमर वीर हैं।

जामिनी राय के चित्रों का प्रतिनिधि संग्रह भी यहाँ है।

विख्यात रूसी चित्रकार निकोलस रोरिक ने, जिनमें हिमालय की आत्मा बस गई थी, अपने अंकित बारह अमूल्य चित्र कलाभवन को प्रदान किए। इनमें से एक में उन्होंने कल्पना की है कि हिमालय पर तपस्या करने वाले एक साधक को सान्ध्य बादलों में अश्वारोही कल्कि रूप का दर्शन हो रहा है, जिनके अवतरे बिना संसार का त्राण सम्भव नहीं। इसकी पृष्ठिका में आरक्त हिमालय आगामी भास्वरता का सूचक है (फलक–५४)।

यहाँ के कुछ दर्शनीय सचित्र ग्रंथ और चित्रावलियाँ

उत्तराध्ययनसूत्र (आरंभिक १५ वीं शती, अपभ्रंश शैली, ३० चित्र); कल्पसूत्र (आरंभिक १५ वीं शती, अपभ्रंश शैली, २५ चित्र); तूतीनामा (१६ वीं शती, दकनी शैली, २५ चित्र); संग्रहणी सूत्र (१७ वीं शती, कश्मीरी शैली, २६ चित्र); गीतगोविन्द (१७ वीं शती, कश्मीरी शैली, स्याह-कलम, १३५ चित्र); दुर्गापाठ (१७ वीं शती, आरंभिक राजस्थानी शैली, ५० चित्र); पंचरत्न (१८ वीं शती, दकनी शैली, १३५ चित्र, प्रथम बाजीराव पेशवा के पाठ करने की पोथी, जिससे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुन्दर हिन्दू धार्मिक पोथी ज्ञात नहीं। श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' के प्रदान से क्रीत); सूर सा ग र (१८ वीं शती, राजस्थानी शैली, २०१ चित्र); रा म च रि त मा न स (१८ वीं शती, राजस्थानी शैली, १५८ चित्र, अद्भुत तथा दर्शनीय); अत्यन्त महीन अक्षरों में लिखा हुआ श्री म द् भा ग व त का ख र्रा (१८ वीं शती, कश्मीरी, २१ चित्र); अत्यन्त महीन अक्षरों में लिखा भ ग व द् गी ता का ख र्रा (१८वीं शती, कश्मीरी, ३५ चित्र, दाता–श्री गोपालदास जी, श्री रघुनाथदास जी, दुलहिन जी की कोठी, काशी); फा र सी सु लि पि का संग्रह (३६ वसलियाँ); दु र्गा पा ठ (आरंभिक १९ वीं शती, पहाड़ी शैली, ५८ चित्र); वा ल्मी कि रा मा य ण (आरंभिक १९वीं शती, पहाड़ी शैली, स्याहकलम, ७०२ चित्र); क रु णा भ र ण ना ट क (आरंभिक १९ वीं शती, पहाड़ी शैली, स्याहकलम, ३२ चित्र); रु क्मि णी मं ग ल (मध्य १९ वीं शती, पहाड़ी शैली, १४ चित्र)।

४. ल लि त क ला वि भा ग (९४७० वस्तु) इस विभाग में उत्तर भारत के विभिन्न प्राचीन स्थानों में मिले मौर्य-काल से लेकर गुप्त-काल के बाद तक वाले मनकों का एक बड़ा संग्रह है। कौशाम्बी से प्राप्त अनेक प्रकार के उपरत्नों के बने पशु, कीट-पतंग आदि की आकृति वाले तथा भाँति भाँति के मुनब्बतदार मनके प्रशंसनीय हैं; इनमें से कुछ मनकों पर नाम भी अंकित हैं। राजघाट से प्राप्त स्फटिक का मानव-मुख युक्त शुंग कालीन ताबीज अतीव सुन्दर और अद्वितीय है; वह इस संग्रह की शोभा है। गांधार की मणियाँ और नग जिनपर सुन्दर आकृतियाँ बनी हैं एवं तक्षशिला के कुछ प्राचीन सोने के आभूषण भी इस विभाग में हैं। यशब की सुन्दर मूठें, पुराने जड़ाव और मीने के काम वाले कुछ नमूने विशेष आकर्षक हैं। राजघाट से मिले फुटकर सामानों में हाथीदाँत की शुंग-कालीन नकाशीदार कंघी एक अनोखी चीज है। मुगल-कालीन उस्तरलाब (ज्योतिष यंत्र) का एक सुंदर नमूना भी यहाँ है। इसपर की लिखावट और ज्यामितिक रेखाएँ बहुत मनोहर और सच्ची हैं। (फलक–१६)

५. व स न वि भा ग (२५४ वस्तु) इस संग्रह में जरी के तथा बहुरंगी बेलबूटेदार महीन काम के बुने हुए अनेक शाल हैं; एक में तो रंगों के साथ ही कलापूर्ण नकाशी की भी बड़ी बहार है। रेशमी वस्त्रों में भांति भांति के किमख्वाब (रेशम में कलाबत्तू की बुनावट), हेमरू (रेशम में रेशम की फूलदार बुनावट), फूलदार साटन, कारचोबी, कामदानी तथा फूलकारी के वस्त्र दर्शनीय हैं। छपौले वस्त्रों में रंगामेजी की विशेषता के साथ महीनकारी का भी महत्त्व है। बंगाल की एक बालूचर साड़ी में १८ वीं शती के नौका

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से, भारत आने वाले फिरंगी बड़े कौशल से चित्रित हैं। सूती वस्त्रों में हाथ के कते बुने पुराने वस्त्र, चिकन, जामदानी, काठ के ठप्पे एवं कलमी रंगाई वाले सूती कनात के टुकड़े तथा छींट के कितने ही टुकड़े इस संग्रह में हैं जो अपने वसन-शिल्प के उत्तम उदाहरण हैं। (फलक–१८)

६. बृहत्तर भारत विभाग (३७ चित्र) भारतीय कला के सर्वाङ्गीण अध्ययन के लिये बृहत्तर भारत में अपनी कला के एवं उससे प्रभावित कला के जो उदाहरण फैले हुए हैं, उनका संग्रह इस विभाग का ध्येय है। यद्यपि यह विभाग अभी आरंभिक अवस्था में है और अर्थाभाव के कारण इसकी अधिक प्रगति नहीं हो पाई है फिर भी, मध्य एशिया के ३सरी से १०वीं शती वाले बीस प्रतिनिधि भित्ति-चित्रों की प्रतिकृतियाँ और सत्रह तिब्बती थानके (चित्रपट) इसमें संगृहीत हो चुके हैं। इस विभाग को अभी बहुत उन्नत करना है जिसमें मंचूरिया, कोरिया से लेकर सिंहल तक के तथा मध्य एशिया, गिलगिट, तिब्बत आदि बृहत्तर भारतीय सभी प्रदेशों का एक समग्र संग्रह दर्शकों को सुलभ हो जाय।

७. मुद्रा विभाग (७१०३ सिक्के) अत्यंत विकसित होते हुए भी यह विभाग बहुत अपूर्ण है। भारत के प्राचीनतम सिक्कों–आहत-मुद्रा–का यहाँ अच्छा संग्रह है जिनमें कुछ नमूने तक्षशिला से प्राप्त शतमान के भी हैं। यहाँ का गुप्त-कालीन सोने के सिक्कों का संग्रह देश के संग्रहालयों में संभवतः अद्वितीय है। चंद्रगुप्त द्वितीय की वैजयन्त भाँति वाली मुद्रा, कुमारगुप्त की छत्र, अश्वमेध, अप्रतिघ, गजारोही और खड्गी भाँति वाली मुद्राएँ तथा बुधगुप्त की मुद्रा दुर्लभ होने के साथ साथ कला और इतिहास की दृष्टि से भी विशेष महत्व की हैं। मध्य-कालीन सिक्कों में महमूद गजनवी का कलमा के संस्कृत अनुवाद वाला सिक्का तथा मुहम्मद-बिन-साम के लक्ष्मी मूर्ति वाले सिक्के विशिष्ट हैं। मुगल-कालीन ताम्र और रजत मुद्राओं का भी यहाँ अच्छा संग्रह है। इनमें अकबर का रामसीय की मूर्ति वाला चाँदी का सिक्का संसार में अद्वितीय है; जहाँगीर की शबीह तथा राशि वाले सिक्के और नूरजहाँ के नाम पर चलाए गए सिक्के भी बड़े सुंदर और दुर्लभ हैं। (फलक–१७)

इस विभाग के पूरक रूप भारतीय डाक टिकटों का एक संग्रह भी यहाँ रहेगा। १८५२ ई० से ईस्ट इन्डिया कम्पनी ने सिंध प्रान्त में डाक विभाग चालू किया; तब से आज तक जितने प्रकार के डाक टिकट देश में चले उनके आरंभिक आलेखनों से तैयार टिकटों तक का परिपूर्ण संग्रह इस विभाग का उद्देश्य है, जिसका श्रीगणेश हो चुका है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

८. इतिहास-पुरातत्व विभाग (१५११७ वस्तु) इसमें इतिहास तथा पुरातत्व सम्बन्धी अनेक प्रकार की वस्तुएँ यथा—अभिलेख, मिट्टी की मुहरें, भाण्ड, सनद आदि हैं। शिलालेखों में बुधगुप्त काल के दो और जयचन्द्र-काल का एक उल्लेखनीय है। ताम्रपत्रों में दो गहड़वाल शासन है। राजघाट की खुदाई में कलाभवन को बहुत बड़ी संख्या में मिट्टी की मुहरें मिली हैं जो शासकों, राजकर्मचारियों, वणिकों, संस्थाओं, मंदिरों, मठों आदि की हैं। कुछ पर यवन देवी देवताओं तथा राजाओं की आकृतियाँ भी अंकित हैं। इतिहास की दृष्टि से ये बहुमूल्य हैं; कला की दृष्टि से भी इनमें अनेक मुहरें प्रेक्षणीय हैं। अनेक मुहरें गुप्त सिक्कों की अनुकृति जान पड़ती हैं। एक मुहर में वीणा बजाता हुआ एक व्यक्ति बैठा है और उसके सामने एक गतिमान् हाथी है; संभवतः यह उदयन की कथा का दृश्य है।

राजघाट भाण्डों का भी यहाँ बड़ा संग्रह है। इनमें कुछ अलंकृत हैं। काले रंग के भाण्डों के कुछ ऐसे टुकड़े हैं जो दर्पण की तरह चमकते हैं। ये भाण्ड प्रचीन काल के पारिवारिक जीवन के प्रतीक हैं।

मुगल बादशाहों के दैनिक व्यवहार की वस्तुओं में इस संग्रह वाली जहाँगीर की जहरमोहरे और यशब की प्यालियों तथा शाहजहानी रकाब की ऐतिहासिक गरिमा है। औरंगजेब की एक विशिष्ट सनद में पश्चिमोत्तर सीमान्त की सामरिक नीति आज्ञापित है। जहाँनारा की बयाज़ (कविता-संग्रह) भी, जिसपर उसकी हस्तलिपि है, विशेष प्रशंसनीय है। ईस्ट इंडिया कंपनी तथा उत्तरवर्ती मुगल सम्राटों की लाख की मुहरों का भी यहाँ अच्छा संग्रह है। ये मुहरें उस समय खरीतों पर लगाई जातीं। (फलक–१६)

९. साहित्य विभाग (५००० से अधिक वस्तु) इस विभाग में १७२१ वि० की रामचरितमानस की एक अत्यन्त प्रामाणिक, अलभ्य हस्तलिखित प्रति है। मधुमालति की एक प्रामाणिक प्रति तथा मृगावति की एकमात्र ज्ञात प्रति भी इसी संग्रह में है। साथ ही, इस विभाग में भारतेन्दु से लेकर अब तक की अनेक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक सामग्री है, जिसमें दयानन्द सरस्वती, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुन्द गुप्त, आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, 'प्रसाद', प्रेमचन्द एवं हिन्दी के सभी साहित्य-स्रष्टाओं और निर्माताओं की अनेक पाण्डुलिपियाँ तथा पत्र हैं। भारतेन्दु जी के कश्मीर कुसुम की पूरी पाण्डुलिपि और श्री महादेवी वर्मा के सांध्यगीत के, उनके अंकित, कविता-चित्र इस संग्रह में अवलोकनीय हैं।

सैकड़ों सामयिक-पत्र पत्रिकाओं के प्रथमांक, कितने ही दुर्लभ पत्रों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फाइल, जिसमें हिन्दी के प्रथम मासिक पत्र हरिश्चन्द्र मैगजीन की पूरी फाइल भी है, अपने ढंग का अद्वितीय संग्रह है।

इस विभाग में भारतेन्दु-काल से आज तक के हिन्दी विकास की मूर्तिमान् झाँकी मिलती है।

१०. हस्तलिखित ग्रंथ विभाग (१६८ ग्रंथ) यह विभाग अभी बहुत छोटा है, इसमें कुछ चुने हुए हस्तलिखित ग्रंथ हैं जिनमें संगीत का दुर्लभ ग्रंथ संगीत-शिरोमणि, रघुवंश की एक महत्वपूर्ण प्रति तथा फारसी में मुद्राशास्त्र पर एक प्राचीन पुस्तक आदि प्रेक्ष्य और मननीय हैं।

११. बापू विभाग (१६ वस्तु) विश्ववन्द्य बापू के महाप्रस्थान के अनन्तर यह विभाग स्थापित किया गया है। इसमें उनके फूल (अवशेष) का एक अंश सुरक्षित है, जिसपर एक सुचारु चैत्य बनाया जायगा (टाइटिल, पृष्ठ ३)। उनके हस्तलेख, उनकी रचना, उनके उपयोग में आने वाली सामग्री, उनके चित्र तथा उनके सम्बन्ध का साहित्य संग्रह किया जा रहा है। उनकी हस्तलिपि में महामना मालवीय जी के नाम दो पत्र तथा एक लेख की पांडुलिपि दर्शनीय है।

इस विशाल संग्रह के अतिरिक्त यहाँ ये कर्म विभाग भी हैं—

पुस्तकालय (११०० ग्रंथ) संग्रहालय के कर्मियों तथा विद्यार्थियों के उपयोग के लिये एक छोटा सा पुस्तकालय है जिसमें पुरातत्व, इतिहास तथा कला सम्बन्धी साहित्य का संग्रह है। यद्यपि इस पुस्तकालय में भारतीय कला और पुरातत्व की अनेक दुर्लभ, मूल्यवान् एवं महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं फिर भी, अभी इसमें बहुत अभाव है जो कम से कम एक हजार और ग्रन्थों के आ जाने पर दूर होगा।

फोटो विभाग (१००० निगेटिव) कलाभवन में संगृहीत सामग्री के फोटो की माँग निरन्तर रहती है, एतदर्थ यह विभाग कायम किया गया है। इसके द्वारा स्वल्प मूल्य पर आवश्यक सामग्री देने का प्रयत्न किया जाता है। इसी प्रकार मूर्तियों आदि के ढार की बढ़ती हुई माँग की पूर्ति के लिये एक ढार विभाग स्थापित करने का विचार है, जहाँ से अपनी मूर्तियों आदि का ढार (कास्ट) स्वल्प मूल्य पर दिया जायगा।

इसके अतिरिक्त संसार भर में बिखरी भारतीय कला एवं पुरातत्व की सामग्री के फोटो तथा ढार आदि एकत्र करना भी हमारा लक्ष्य है कि एक ठिकाने समस्त भारतीय कला और पुरातत्व का अध्ययन और आस्वादन सरलतापूर्वक संभव हो जाय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशन विभाग कलाभवन का यह विभाग अर्थाभाव के कारण मंथर गति से चल रहा है। स्व० आचार्य केशवप्रसाद मिश्र कृत मेघदूत का हिन्दी पद्यानुवाद श्री शैलेन्द्रनाथ दे के बारह चित्रों सहित इस विभाग ने प्रकाशित किया जिसकी बड़ी पूछ हुई; यह अब अप्राप्य है। इसी प्रकार अनेक पुराने एवं अलभ्य ध्रुपदों की स्वरलिपि का संग्रह भी संगीत-समुच्चय नाम से निकला था। कलाभवन की चुनी वस्तुओं के १६ कार्डों का एक सेट भी प्रकाशित हुआ जो बहुत पसन्द किया गया, संप्रति यह भी अप्राप्य है।

कलाभवन की बहुमूल्य सामग्री प्रकाश में लाने और जनता में कला-चेतना उपजाने तथा अपनी कला एवं संस्कृति के अनुशीलनार्थ कलानिधि त्रैमासिक का प्रकाशन भी आरम्भ किया गया। इसके अभी दो अंक निकले हैं। राष्ट्रपति के शब्दों में—

"अपने ढंग की यह एक नई चीज" है।

आगे भी अन्य उपादेय प्रकाशनों की विविध योजनाएँ हमारे सामने हैं।

जिन प्रदाताओं की उदारता से अब तक कलाभवन की यह समुन्नति हुई है उनके दान की रकम गोल आँकड़ों में चार लाख है। इन प्रदानों के अतिरिक्त काशी के प्रसिद्ध कलाप्रेमी रईस श्री किशोरीरमण प्रसाद और उनके उत्साही अनुज श्री राधारमण प्रसाद ने अपना १५,०००) का चित्र-संग्रह कलाभवन को सहर्ष भेंट किया है। इसी प्रकार दानवीर श्री सेठ मुरारीलाल जी केडिया ने अपना चित्र, मूर्ति, तथा सिक्कों आदि का २०,०००) वाला संग्रह अपने पिता स्वर्गीय सेठ रामरत्नदास जी केडिया की स्मृति में अर्पण कर दिया है। अन्य चित्रदाताओं में स्व० डाक्टर कुमारस्वामी, राजा श्रीकृष्णदत्त दुबे (जौनपुर) और कुँवर विचित्रशाह (टेहरी) के नाम उल्लेखनीय हैं।

श्री सीताराम साह ने अपने अनुपम चित्र-संग्रह से कतिपय दुर्लभ और बहुमूल्य चित्र प्रदान करके कलाभवन संग्रह की ठोस अभिवृद्धि की है। वे अपना समूचा संग्रह भी किसी न किसी दिन कलाभवन को अवश्य प्रदान करेंगे, जिससे कलाभवन संसार का अद्वितीय संग्रहालय हो जायगा।

१९५० ई० से कलाभवन काशी विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हो गया है। विश्वविद्यालय इसके लिये अपने क्षेत्र में पच्चीस लाख की लागत का एक विशाल भवन बना रहा है, जिसका शिलान्यास रथयात्रा २००७ वि०(१७जूलाई १९५० ई०) को श्री जवाहरलाल नेहरू ने किया। दो लाख रुपये की लागत से इसका सामने वाला अंश प्रायः तैयार हो चुका है (टाइटिल, पृष्ठ १,२)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevaṭion Foundation, Chandigarh

कलाभवन की बँधी वार्षिक आय बीस हजार है, जिसमें पंद्रह हजार काशी विश्वविद्यालय और पैंतीस सौ उत्तर प्रदेश प्रशासन देता है। विश्वविद्यालय ने यहाँ का प्रबन्ध एक सम्भ्रान्त समिति को सौंप रक्खा है (पृ०.१५)।

फलकों का उल्लेख

फलक	पृष्ठ
१, २	२
३–१५	३
१६	२, ८, १०
१७, १८	६
१६–२७	४
२८–३७	५
३८–४७	६
४८–५४	७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राष्ट्रपिता बापू

संग्रह बहुत अच्छा है।

कवीन्द्र रवीन्द्र

,,, glad to join the Society for I feel the great need of such institutions in our country ...gladly accept Presidentship.

डा० आनंद कुमारस्वामी

You have begun a most valuable work... Congratulations.

नेताजी सुभाषचंद्र बोस

I am delighted to visit this wonderful institution. May God grant this institution a career of increasing prosperity. Those who are doing so much for Indian art and culture are real benefactors of our nation, and they are helping India to achieve her cultural salvation.

म. म. गौरीशंकर हीराचंद ओझा

·· कलाभवन वस्तुतः एक दर्शनीय संग्रहालय बन गया है। आठ वर्ष पूर्व मैंने कलाभवन को शैशवावस्था में देखा था, तब से इसकी निरंतर श्रीवृद्धि होती रही है। प्रतिमा-संग्रह···तथा···चित्र वस्तुतः अत्यन्त प्रशंसनीय हैं।···

श्री राजेंद्रप्रसाद

···कलाभवन को देखकर अत्यन्त संतोष हुआ।···

श्री जवाहरलाल नेहरू

यहाँ फिर से आकर दिल बहुत खुश हुआ। इस सुन्दर संग्रह को जब मैं देखता हूँ मुझे खुशी होती है। मैं आशा करता हूँ कि एक दिन ऐसा आएगा जब भारत की कलाओं का एक बहुत बड़ा संग्रह तैयार किया जाएगा।

चित्राचार्य श्री नंदलाल बोस

कलाभवन भारतीय सुकुमार शिल्पेर गौरव वृद्धि कर छे। इहा भारतीय शिल्पेर संस्कृति पथेर विशेष सहायक हबे। एइ कलाभवन शिल्पीगणेर तीर्थ-मंदिर रूपे आगत काले गण्य हबे, आमार ध्रुव धारणा।

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त

कलाभवन ऐसा उपवन है जिसमें शताब्दियों की स्मृति-लताएँ फूल कर दर्शक के मन पर छा जाती हैं। यहाँ आकर हम एक अद्भुत आमोदपूर्ण वायुमंडल में आ जाते हैं।···

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कलाभवन-समिति

प्रधान

आचार्य नरेन्द्रदेव

कुलपति, का० वि० वि० (पदेन)

उप-प्रधान

प्राध्यापक वि० वा० नार्लीकर

उप-कुलपति, का० वि० वि० (पदेन)

मंत्री

राय कृष्णदास

सदस्य

सर्वश्री—

डा० अनन्त सदाशिव अल्तेकर

मौ० अबुलकलाम आज़ाद
शिक्षा मंत्री, केन्द्र (पदेन)

राय आनंदकृष्ण

संगीतमार्तण्ड ओंकारनाथ ठाकुर

कृष्णानंद
प्रिंसिपल, डी० ए० वी० कालेज, बनारस

गोविन्द मालवीय

ज्योतिभूषण गुप्त

चित्राचार्य डा० नन्दलाल बोस

व्रजमोहन व्यास

मुरारीलाल केडिया

राष्ट्रकवि डा० मैथिलीशरण गुप्त

डा० मोतीचंद

रणदा उकील

डा० राजबली पाण्डेय
प्रिंसिपल, भारती महा विद्यालय, का० वि० वि०

डा० रामशंकर त्रिपाठी
प्रिंसिपल, सेंट्रल हिन्दू कालेज, का० वि० वि०

डा० वासुदेवशरण अग्रवाल

प्रा० शिवशरण
श्री कलासंगीत-भारती, का० वि० वि०

डा० सम्पूर्णानंद
श्रम मंत्री, उत्तर प्रदेश प्रशासन

सीताराम साह

डा० सूर्यकान्त
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
भारती महाविद्यालय, का० वि० वि०

हरशरण

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

निबन्ध

सर्वश्री विजयकृष्ण

परमेश्वरीलाल

आनन्द कृष्ण

विश्वनाथप्रसाद

'तरह' और फ़ोटो

श्री अम्बिकाप्रसाद दुबे

मान-चित्र

श्री जगरदेव

ब्लाक

हिन्द आर्ट काटेज, बनारस-१

प्रूफ़-शोधक

श्री सच्चिदानन्द ओझा

मुद्रक

शारदा मुद्रण, बनारस-१

प्रकाशक

भारत-कला-भवन, बनारस-५

---

१ ९ ५ ३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

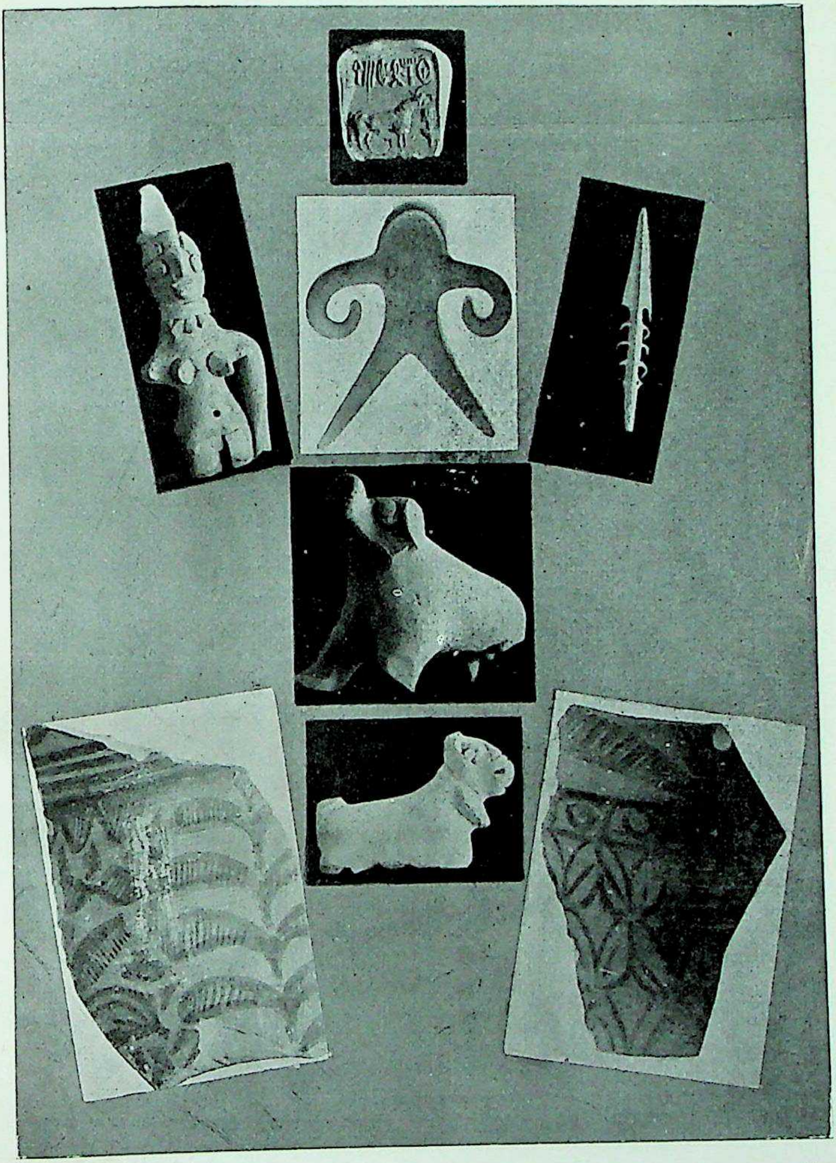

१. मुहर मुहेंजोदड़ो मिट्टी की मानवाकृति मुहेंजोदड़ो ताम्रकी मानवाकृति ताम्र युग बिसौली जिला बदायूँ हथियार ताम्र युग बिसौली जिला बदायूँ मिट्टी की पशु आकृति मुहेंजोदड़ो रंगीन भांडके टुकड़े मुहेंजोदड़ो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

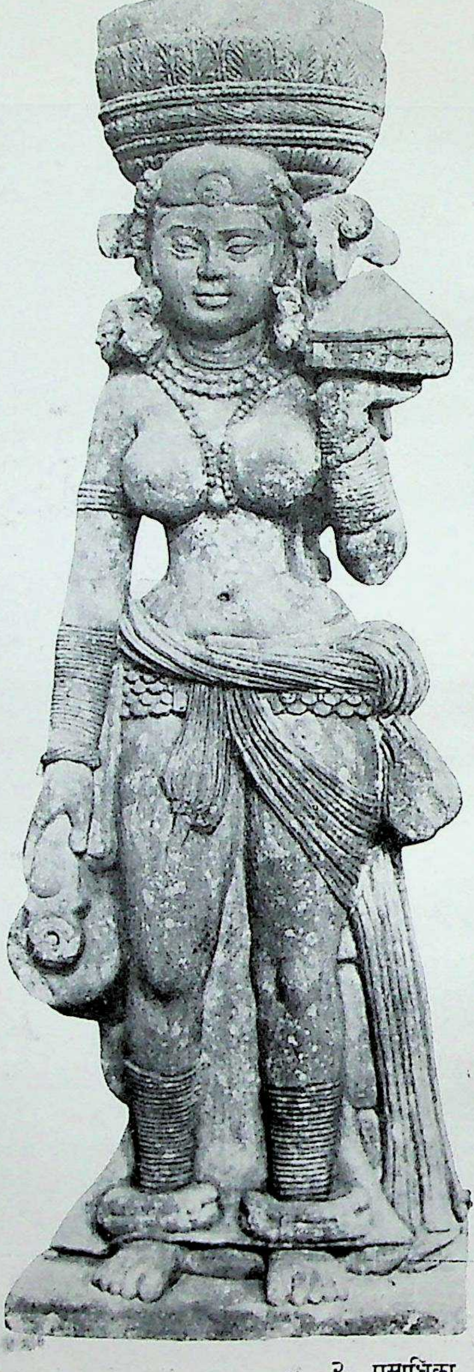

२. प्रसाधिका
कुषाण काल १ ली-२ री शती ई० मथुरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

३. माखनचोरी
मथुराशैली
२ री-३ री शती ई०

४. प्रसाधनवाहिनी
मथुराशैली
३ री शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५. कार्तिकेय
गुप्तकाल
५ वीं शती ई०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

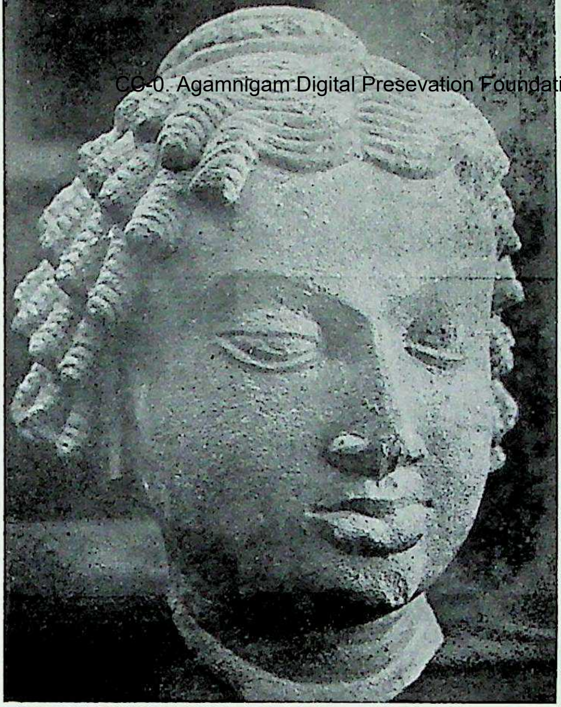

६. सुमुख-
राजघाट
गुप्तकाल
५ वीं शती

७. शिवमुख
राजघाट
गुप्तकाल
५ वीं शती

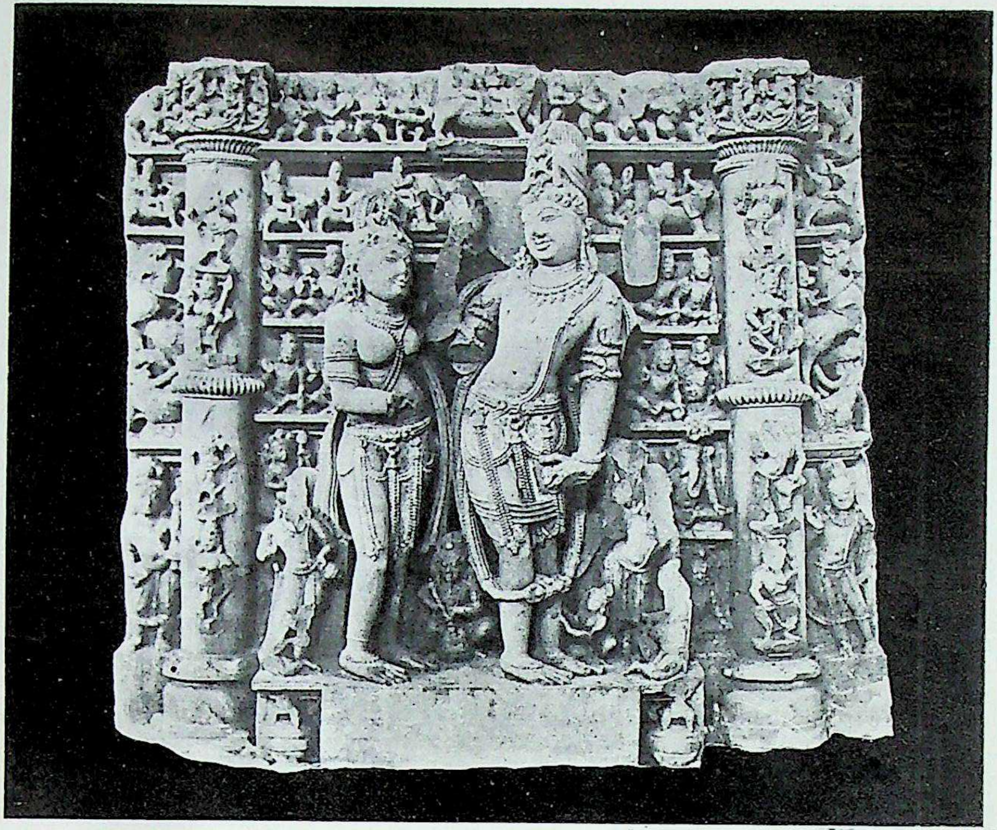

८. पार्वती-परिणय
मध्यकालीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

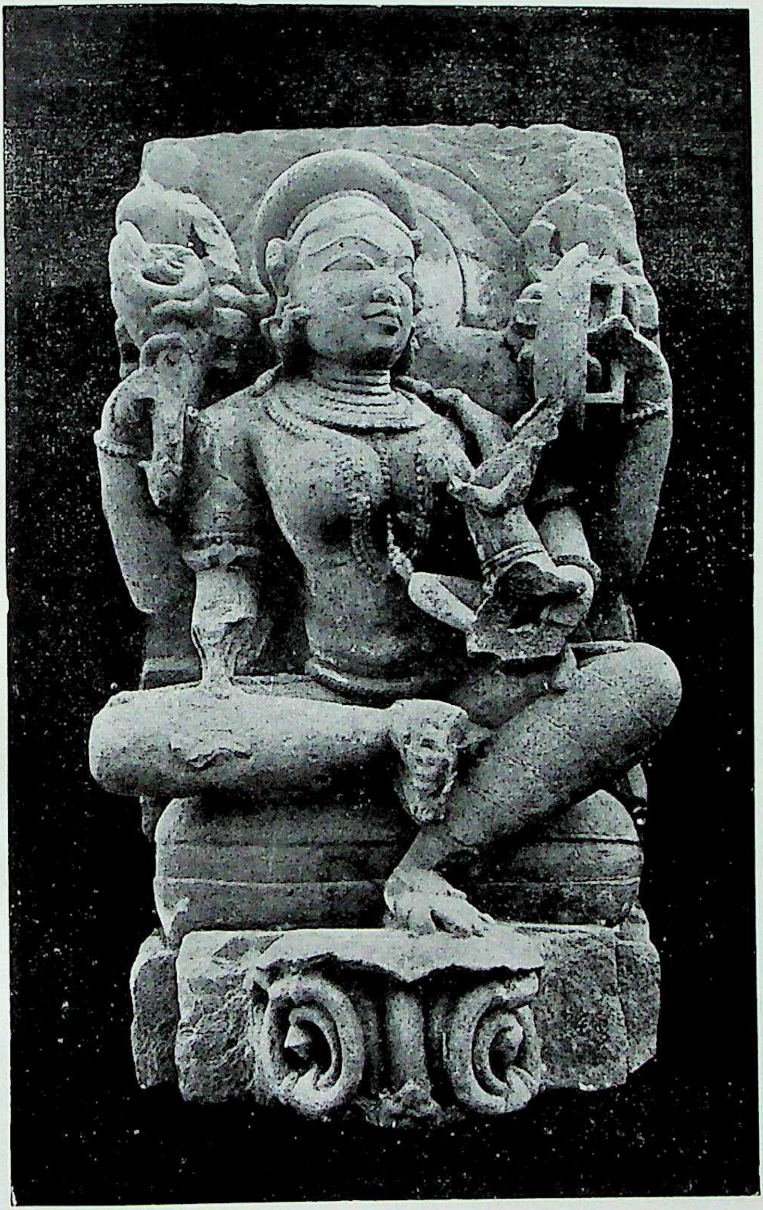

६. दर्पण गौरी
मध्यकालीन चंदेल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१०. बुद्ध जननी
गांधार
३ री शती

११. बोधिसत्व
गांधार
३ री शती

CC-0. ... Digit... ...eva... ...ndation, Chandigarh

१२. बोधिसत्व
मुखौटा
नेपाल

१३. पद्मपाणि
नेपाल

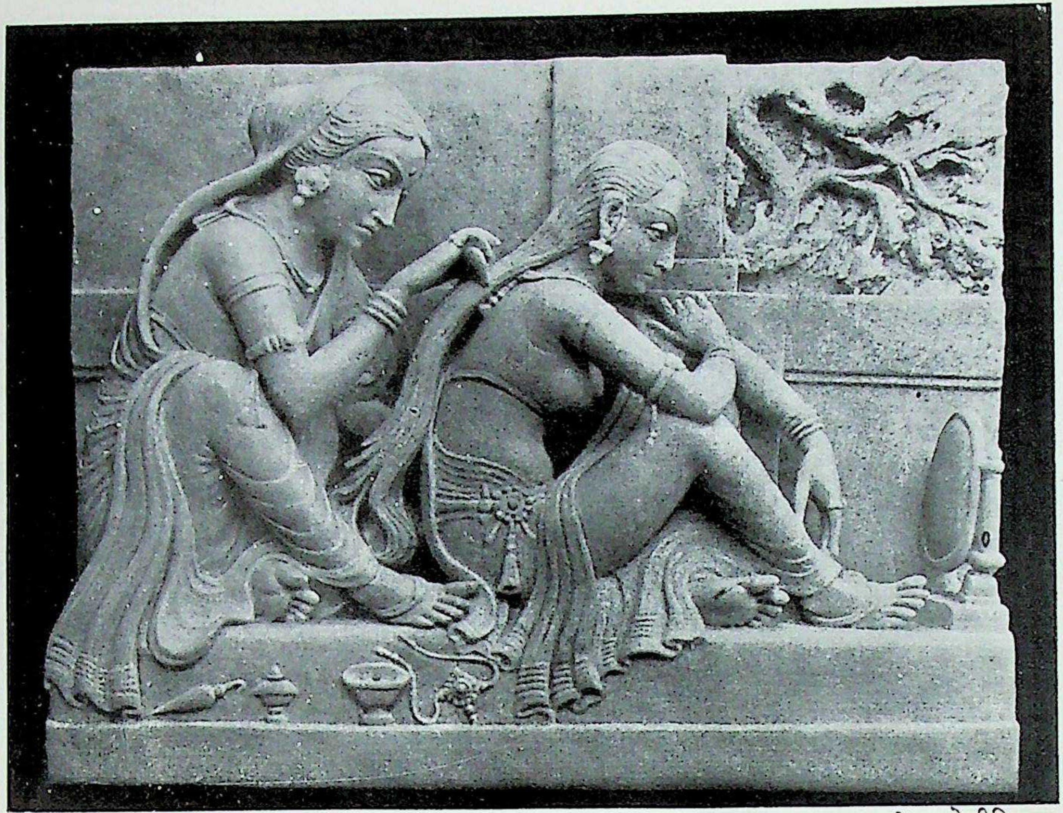

१४. वेणीविन्यास

आधुनिक

श्रीधर महापात्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

१५. मिट्टी की मुहरें और खिलौने राजघाट
मथुरा और कौशाम्बी

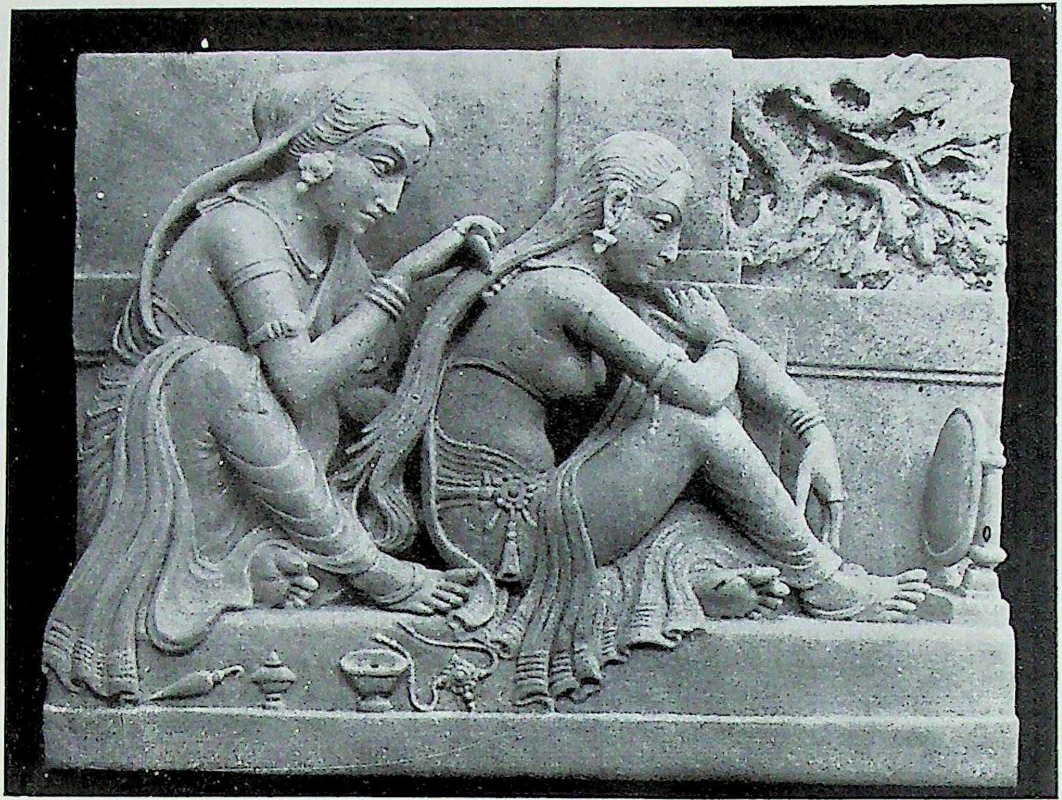

१४. वेणीविन्यास

आधुनिक

श्रीधर महापात्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१५. मिट्टी की मुहरें और खिलौने राजघाट
मथुरा और कौशाम्बी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

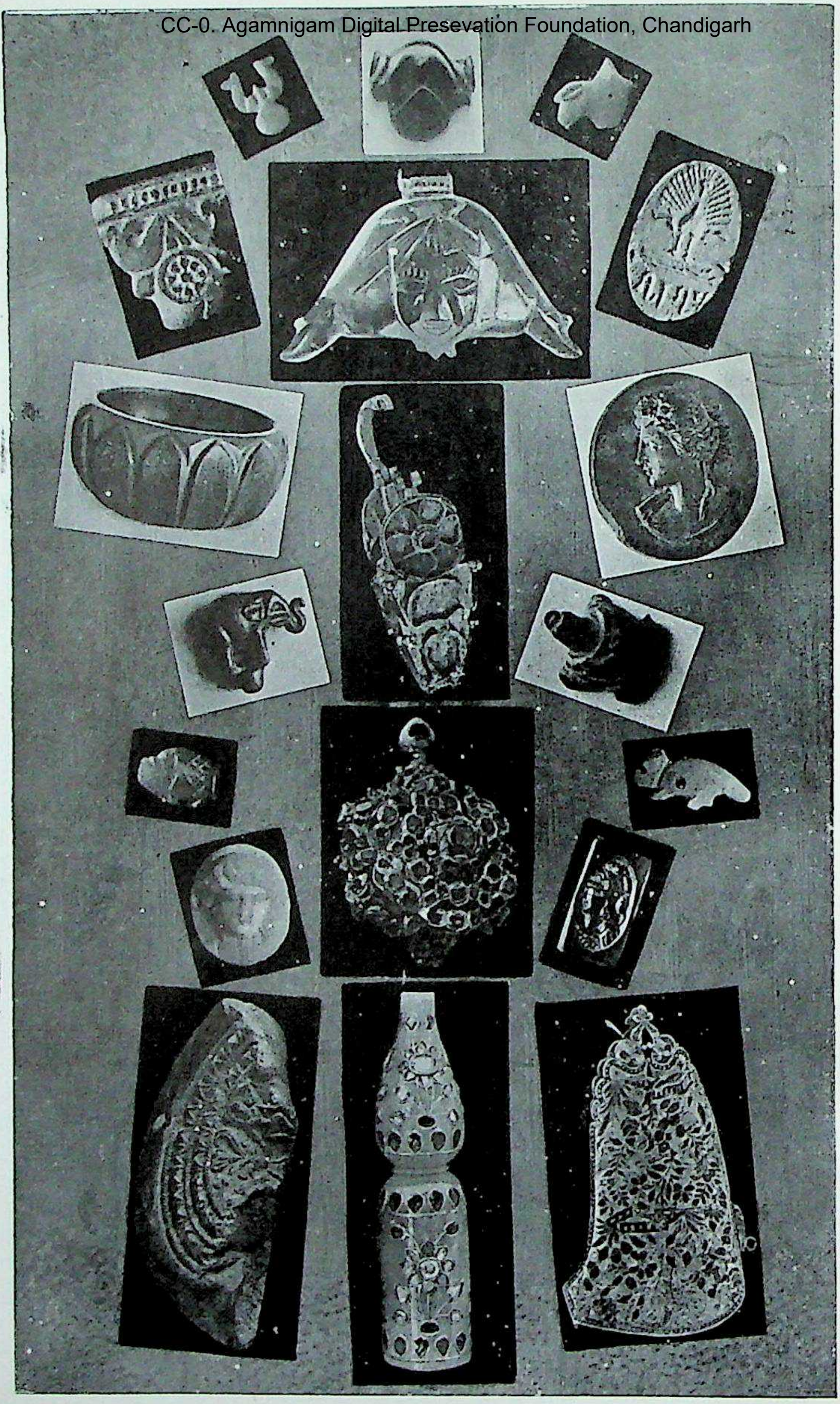

१६. मनके मणि और जड़ाऊ एवं मीनाकारी की वस्तुएँ आदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्द्रगुप्त द्वितीय धनुर्धर भाँति

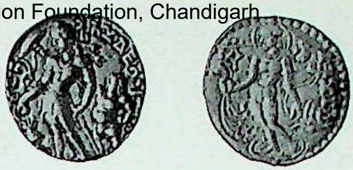

चन्द्रगुप्त द्वितीय छत्र भाँति

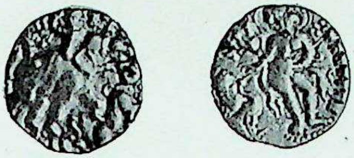

कुमार गुप्त प्रथम गजारूढ़ सिंह निहन्ता भाँति

कुमार गुप्त प्रथम गजारूढ़ भाँति

कुमार गुप्त प्रथम खड्गी भाँति

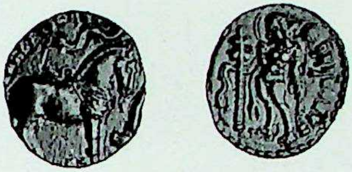

कुमार गुप्त प्रथम अश्वमेध भाँति

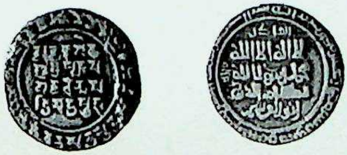

मुहम्मदगजनी संस्कृत अभिलेखयुक्त

मुहम्मद गोरी लक्ष्मी भाँति

अकबर रामसिय भाँति

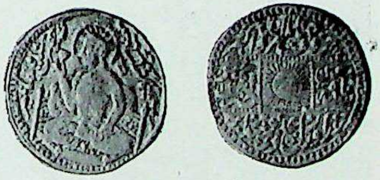

जहाँगीर शबीह से युक्त

जहाँगीर मेषराशि

नूरजहाँ

१७. सिक्के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

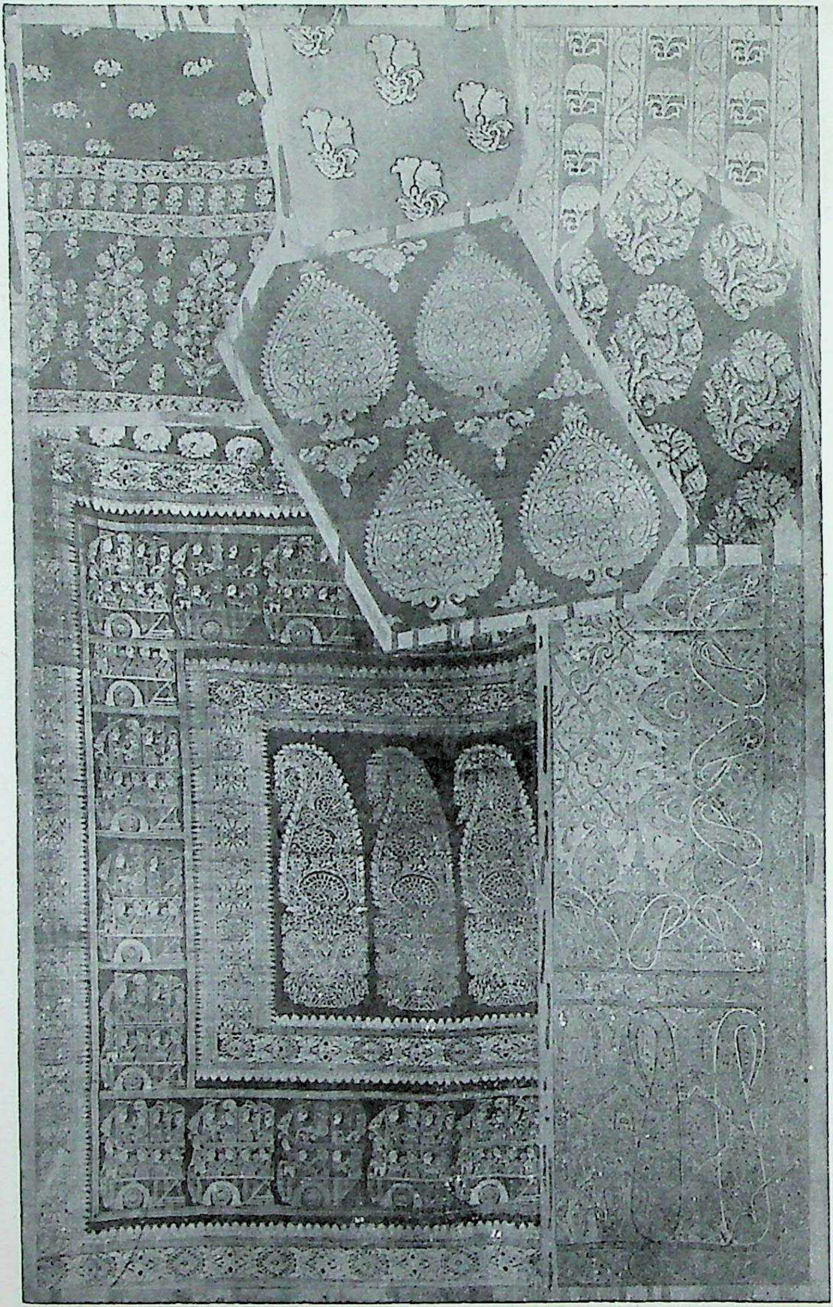

१८. जामदानी साड़ी १८ वीं शती हेमरू १७ वीं शती किमखाब
बालूचर साड़ी कशमीरी शाल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१६. प्रज्ञापारमिता
सचित्र तालपत्र
पालकालीन ११ वीं शती

२०. एकचित्र

२१. पोथी का पटरा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

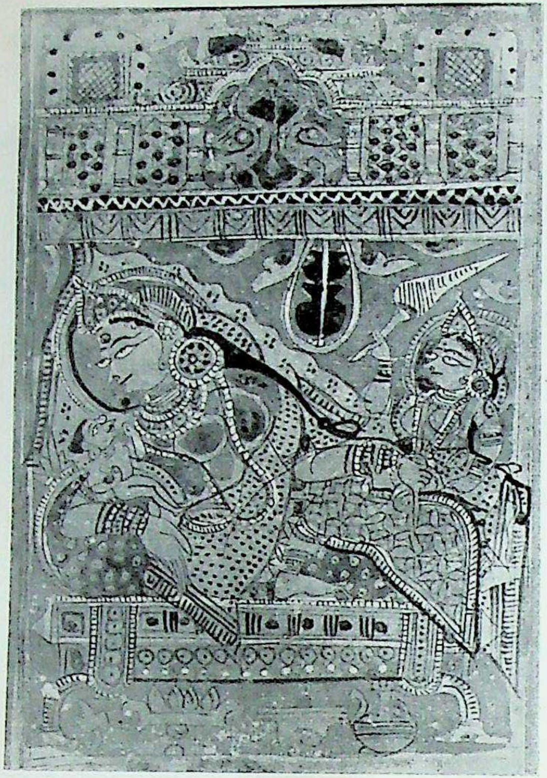

२२. महावीर जन्म कल्प सूत्र
अपभ्रंशशैली १४ वीं शती

२३. उत्तराध्ययन सूत्र
अपभ्रंशशैली १४ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

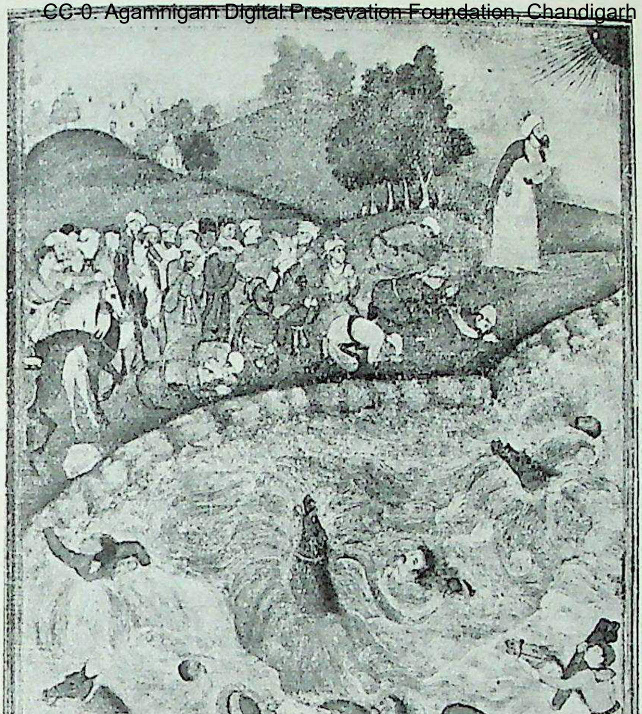

२४. हजरत मूसा का पलायन
मुगलशैली १६ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२५. सन्त मेरी
मुगल शैली १७ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

२६. शाहजहाँ का दरबार
मुगलशैली १७ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

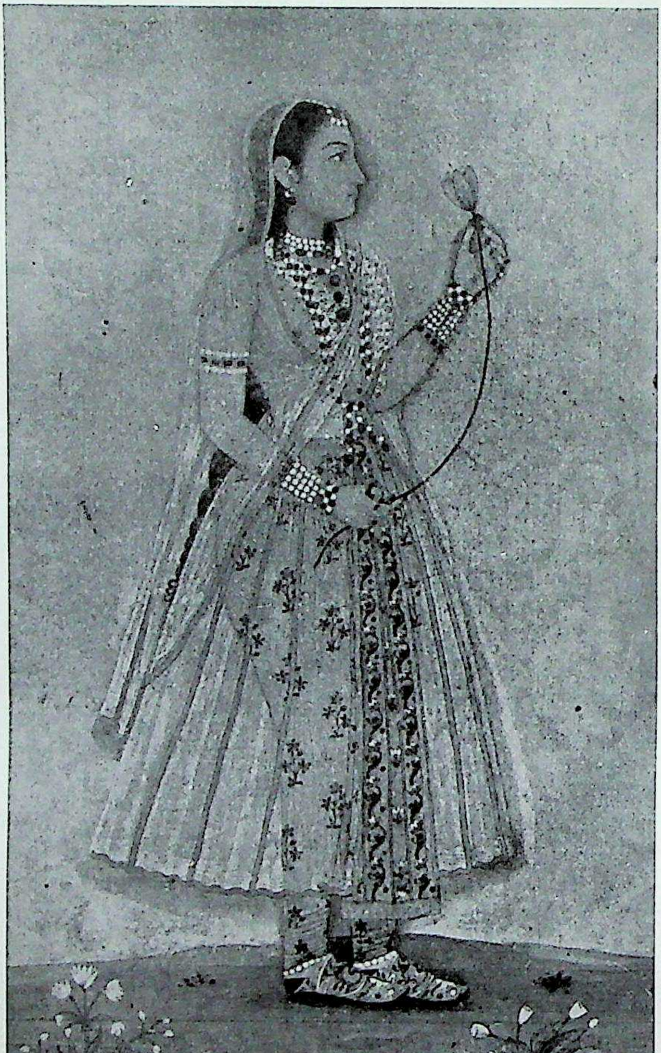

२७. मुगल सुन्दरी
मुगलशैली १७ वीं शती

२८. ईरानी सौन्दर्य
ईरानी १७ वीं शती

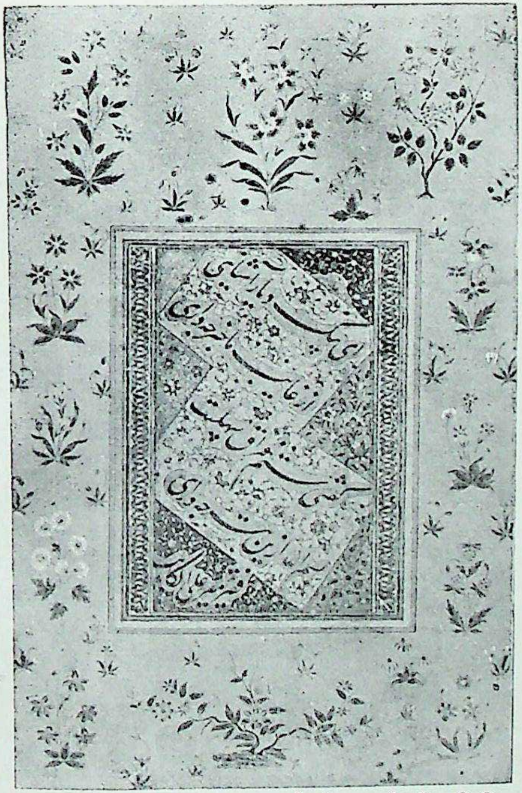

२९. सुलेखाचार्य मीर अली की सुलिपि
१७ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

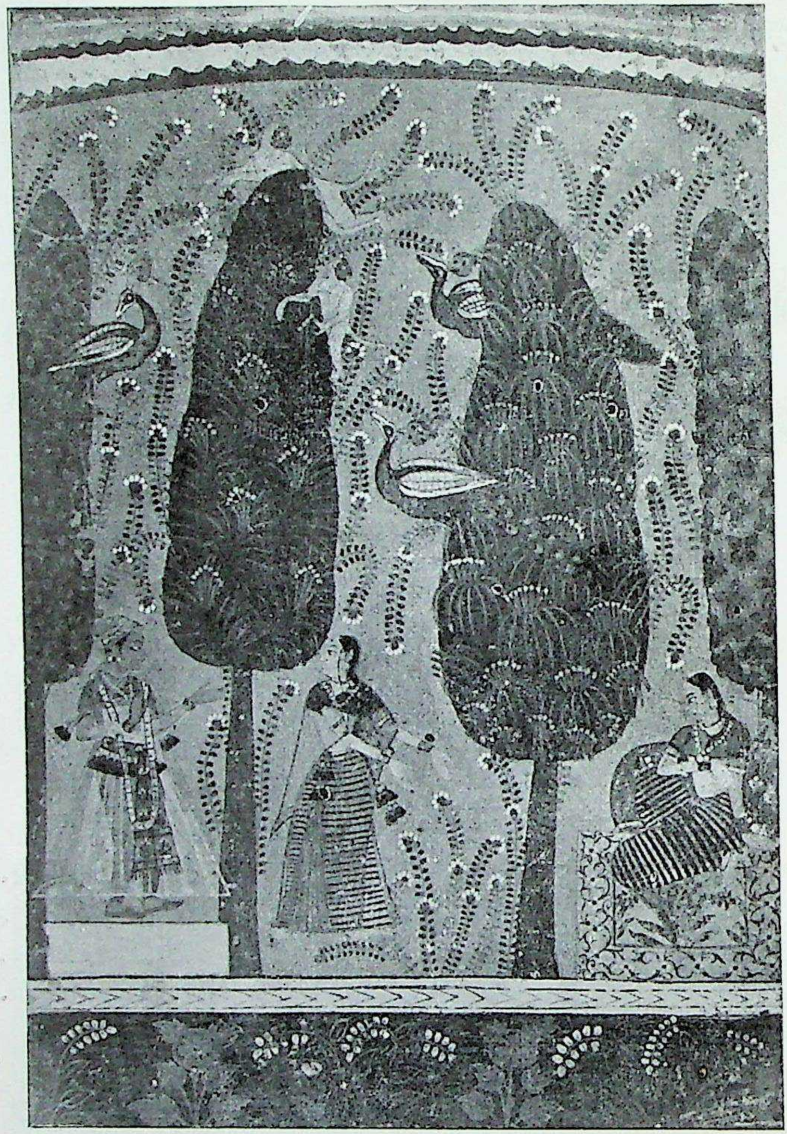

३०. मानवती
आरम्भिक राजस्थानी, १७ वीं शती

३१. दावानल आचमन
राजस्थानी मेवाड़ १७ वीं-१८ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

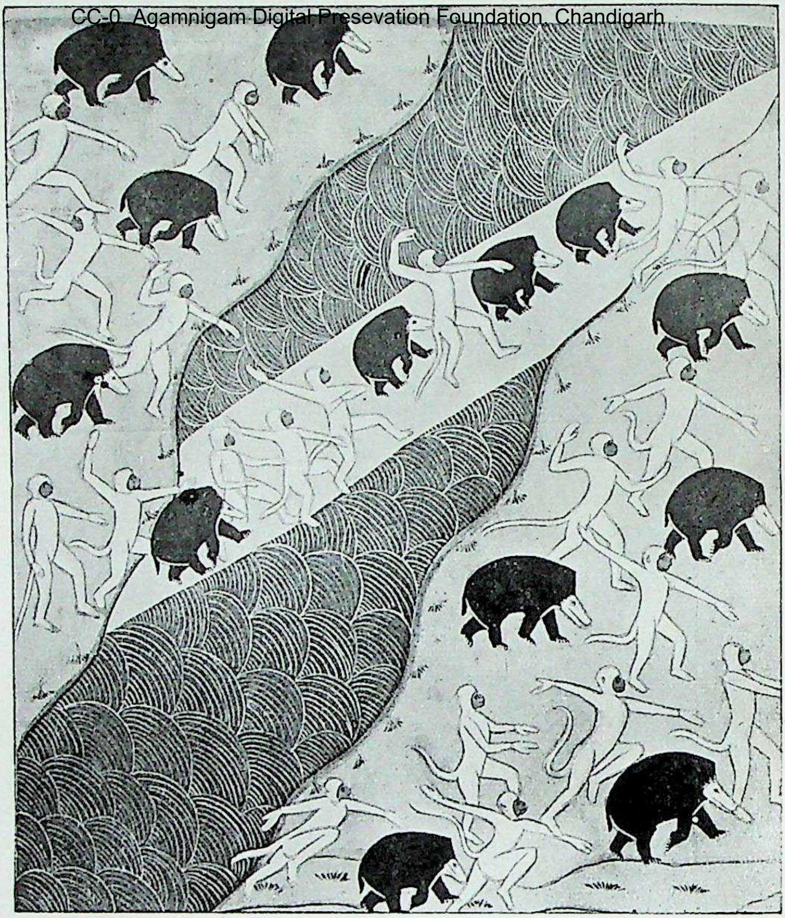

३२. सेतुबन्ध
राजस्थानी १८ वीं शती

३३. बिगड़ा हाथी
राजस्थानी
बूँदी
१६ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

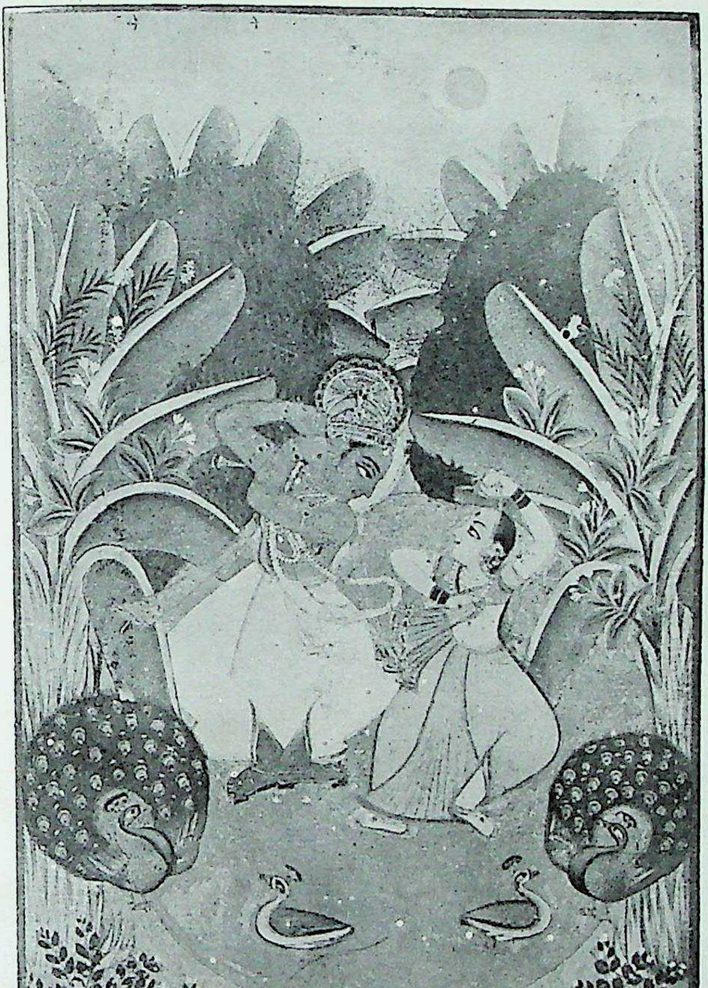

३४. युगलनृत्य
राजस्थानी बूँदी १८ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

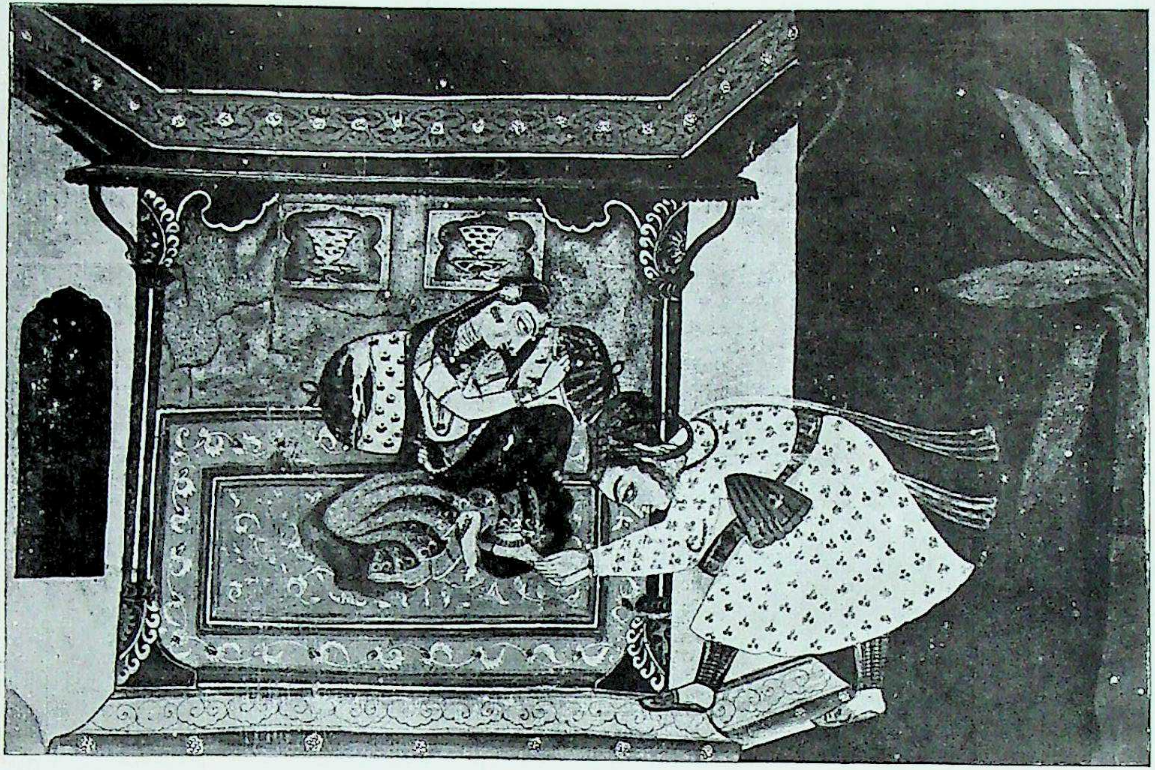

३५. मानमनावन

बसोहली १८ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

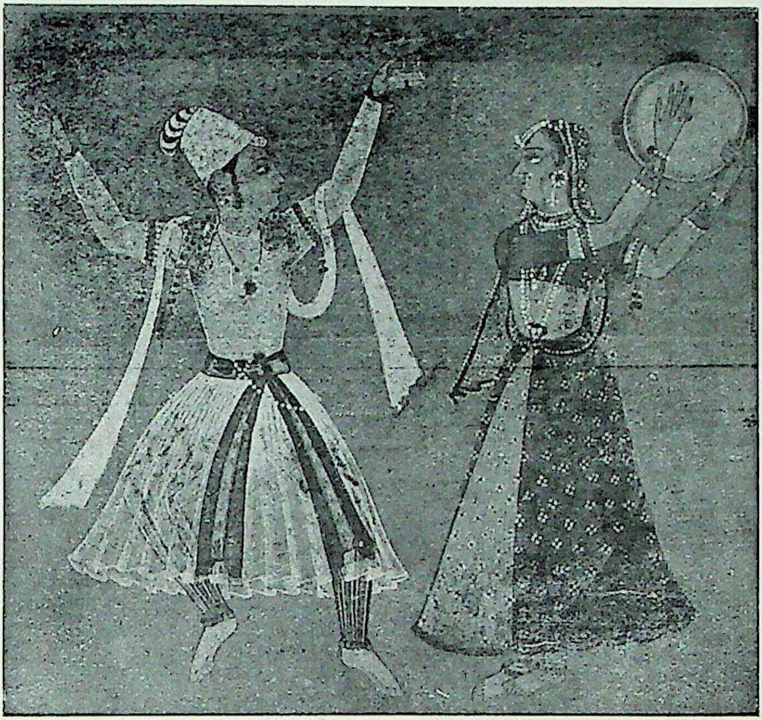

३६. डफ पर नाच कुमार नन्द राग
बसोहली १८ वीं शती

३७. प्रेम-पाश
बसोहली १८ वीं शती

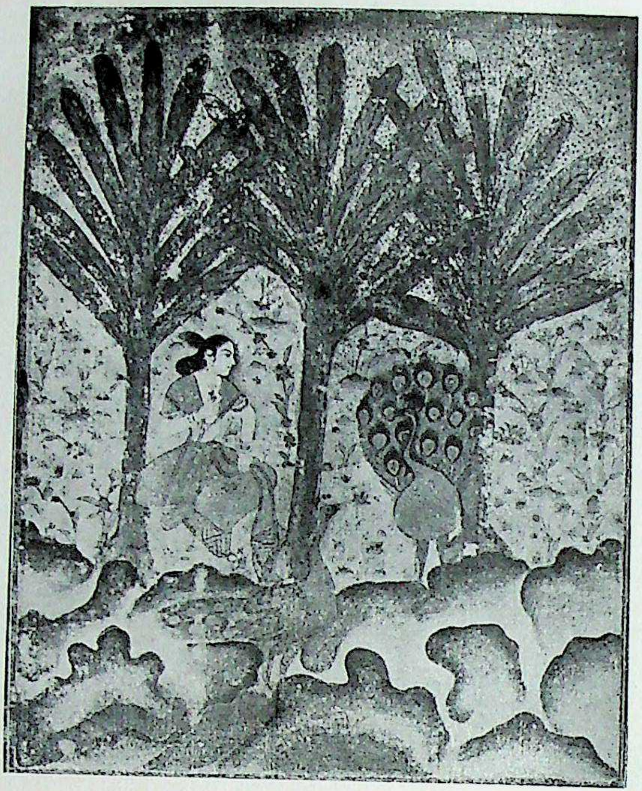

३८. तिरवन रागिनी
दकनी १७ वीं शती

३९. शावक प्रिया
दकनी १८ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४०. गोपिका वल्लभ
उड़ीसा १६ वीं शती

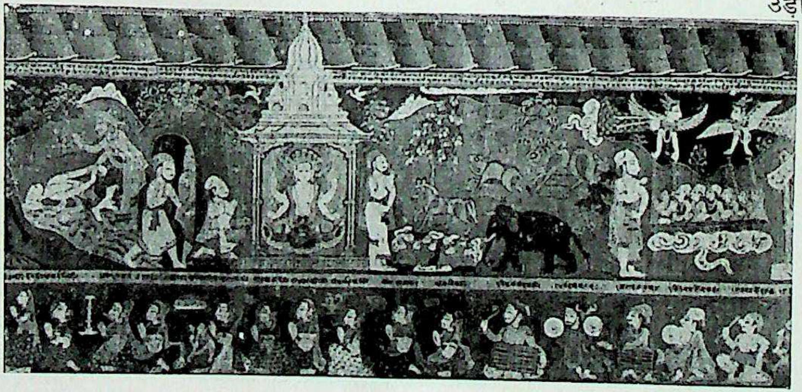

४१. तोरण
नेपाली १८ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

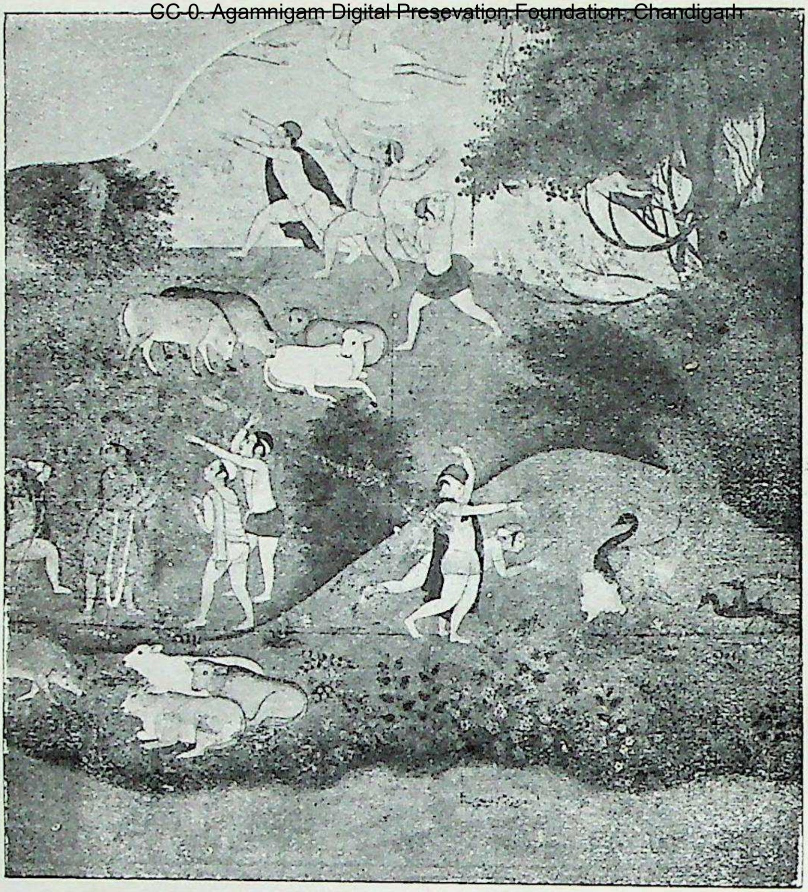

४२. वनविहार
पहाड़ी १८ वीं शती

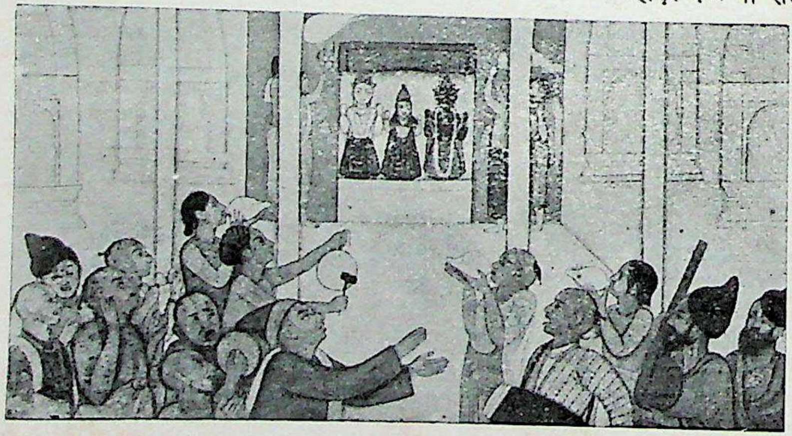

४३. आरती
पहाड़ी १८ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४४. गोवर्धनधारी
पहाड़ी १८ वीं शती
चित्रकार मजनू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

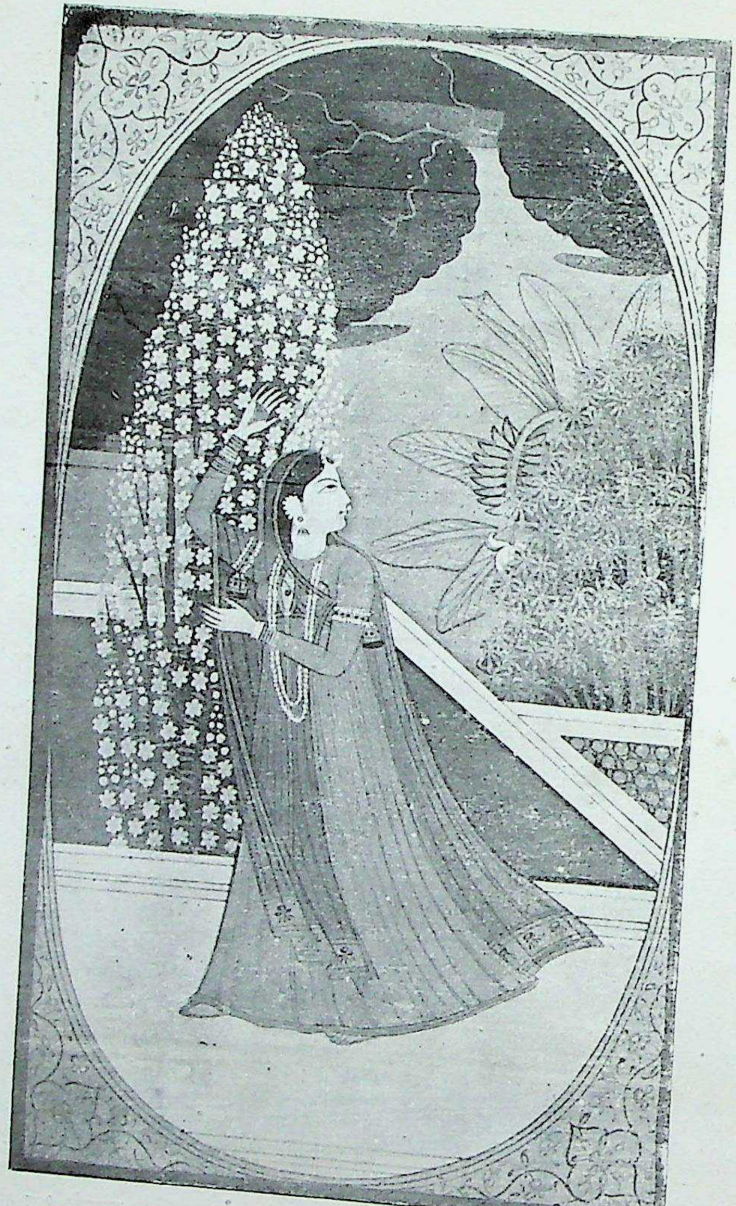

४५. विजली की कौंध
पहाड़ी १९ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

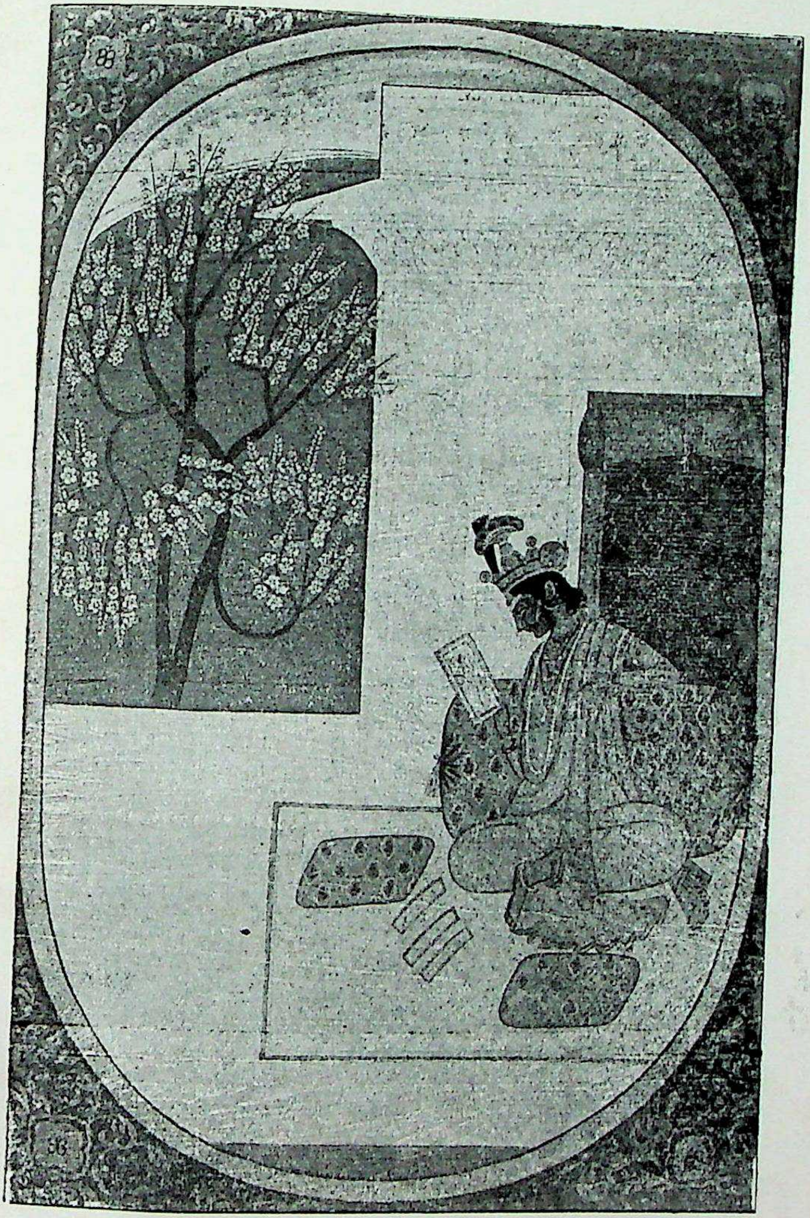

४६. चित्रदर्शन
पहाड़ी १६ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

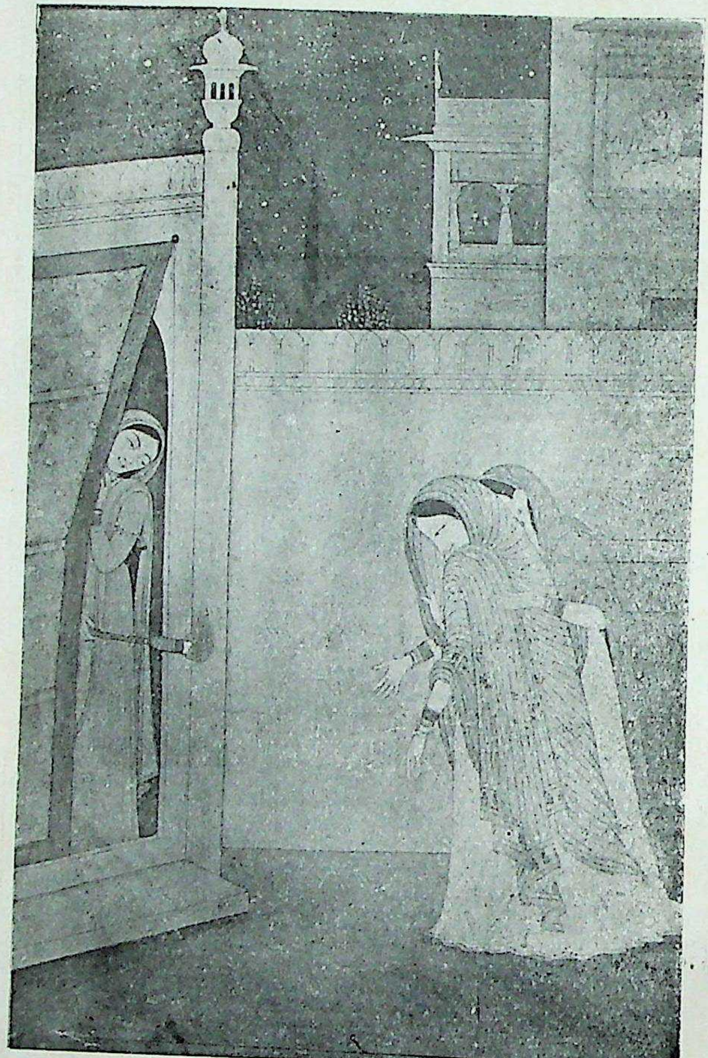

४७. नवल वधू
पहाड़ी, १८ वीं शती

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

४८. वधूटी
कलागुरु अवनीन्द्रनाथ ठाकुर

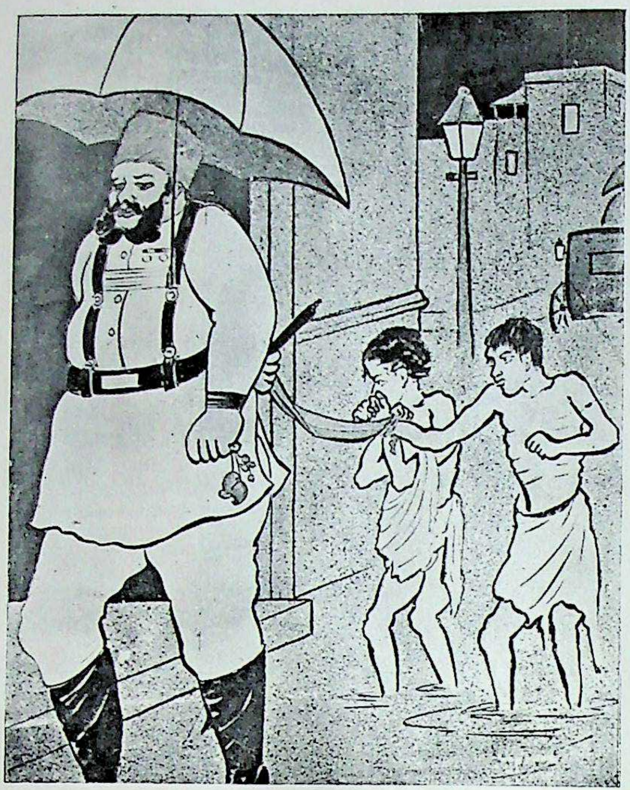

४९. पुलिस की तत्परता
गगनेन्द्रनाथ ठाकुर

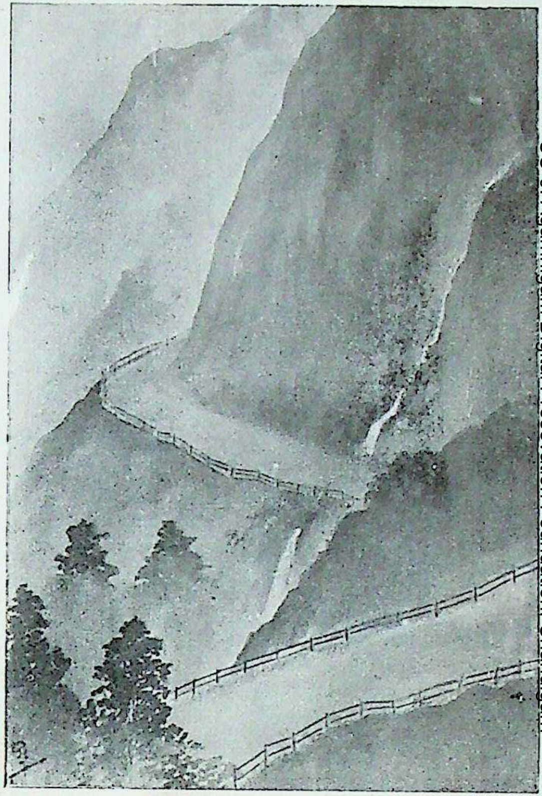

५०. पहाड़ी पथ
गगनेन्द्रनाथ ठाकुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५१. विसूर विरहिनी विष्णुप्रिया
श्री क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार

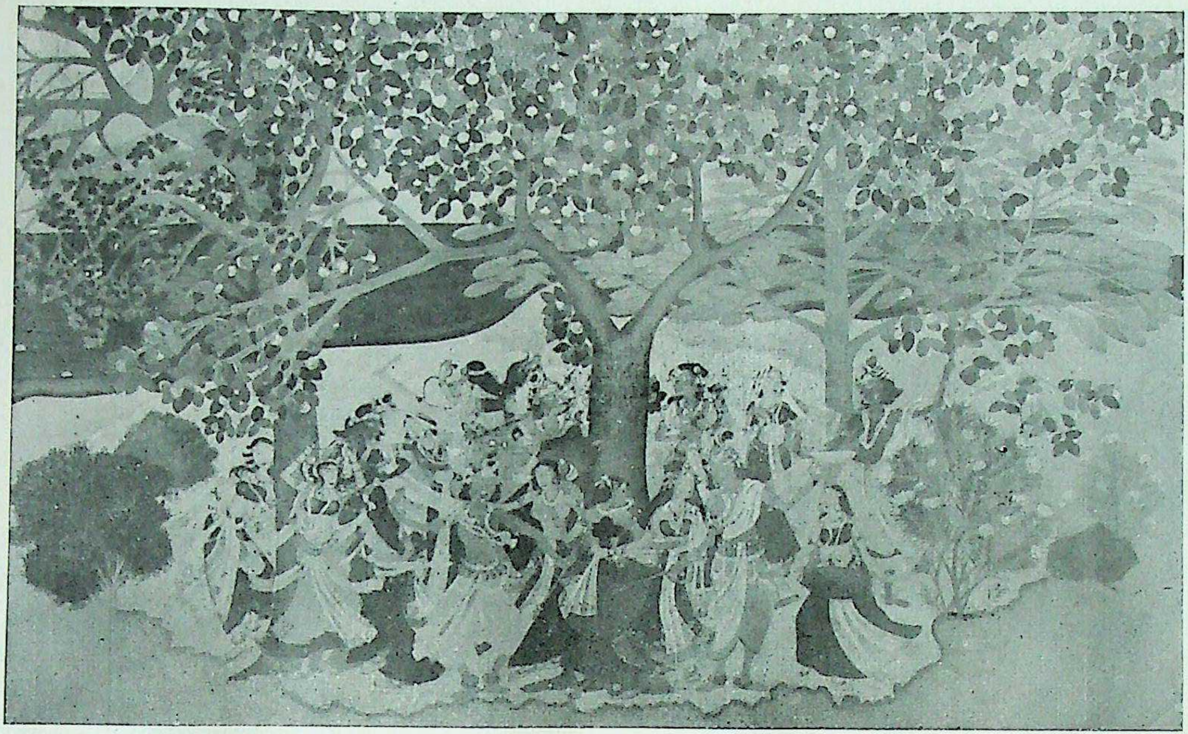

५२. रासविलास
सुकुमारी देवी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

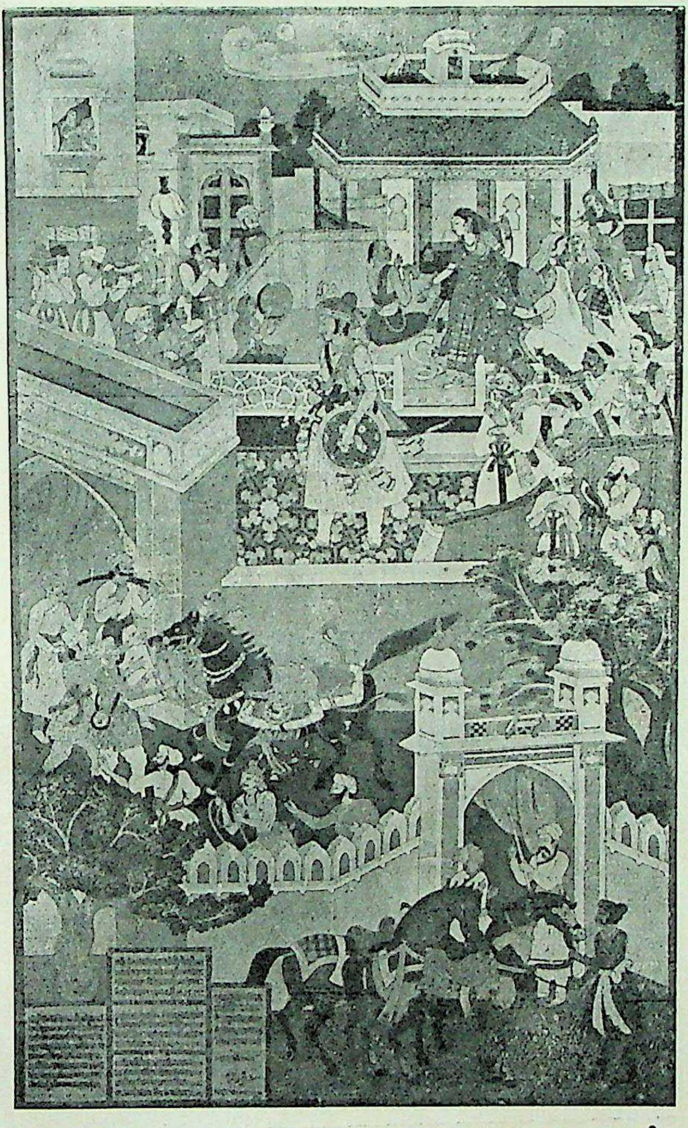

५३. पाबू जी
श्री कृपालसिंह शेखावत

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५४. कल्कि
निकोल सरोरिक

राज्य संग्रहालय
क्रम 3833
प्राप्ति 24/9/…
State Museum, Library

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

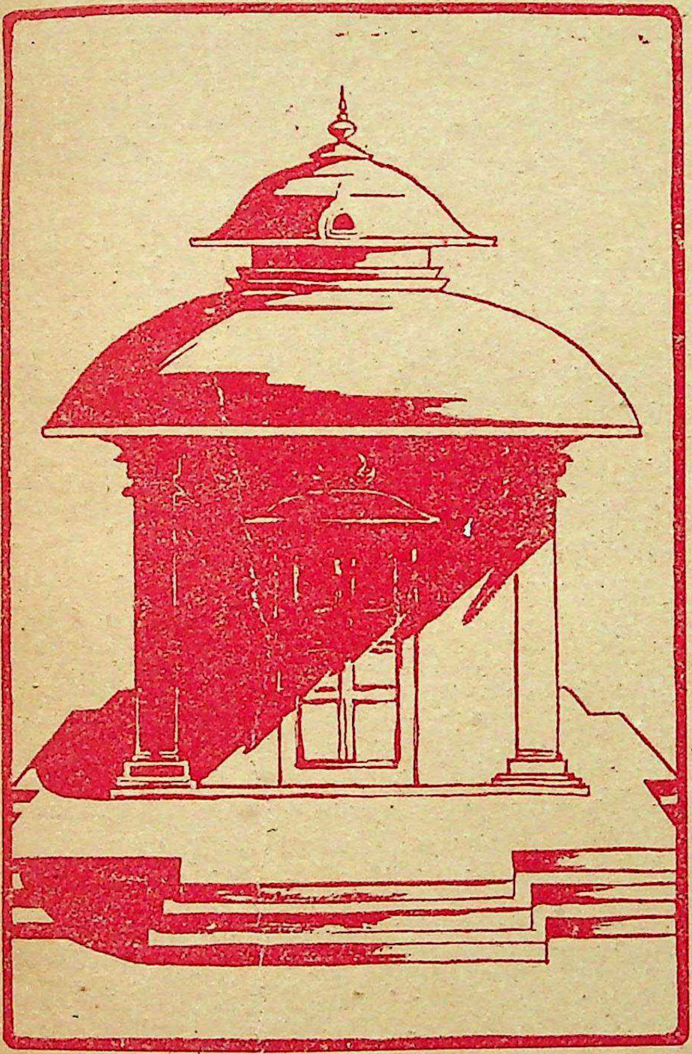

प्रस्तावित बापू-चैत्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh